पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१८, अंकः-७, जनवरी, सन्-२०१६, सं०-२०७२ वि०, दयानंदाब्द १९१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११६; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

निराला–जयन्ती

भारत-जागरण का प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्य समाज को जाता है

ऋषि दयानन्द से बढ़कर समाज पर उपकार किसी अन्य महापुरुष ने नहीं किया

–महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'–

उन्नीसवीं सदी का परार्द्ध भारत के इतिहास का अमर स्वर्ण प्रभात है। कई पावन-चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर, इस समय, इस पुण्य भूमि में अवतीर्ण हुए हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन्हीं में एक महाप्रतिभा मंडित महापुरुष हैं।

हम देखते हैं, हमें इतिहास भी बतलाता है, समय की एक आवश्यकता होती है। उसी के अनुसार धर्म अपना स्वरूप ग्रहण करता है। हम अच्छी तरह जानते हैं, ज्ञान सदा एकरस है, वह काल के बन्धन से बाहर है, और चूँकि वेदों में मनुष्य-जाति की प्रथम तथा चिरंतन ज्ञान-ज्योति स्थित है, इसलिए उसके परिवर्तन की आवश्यकता सिद्ध नहीं होती, बल्कि परिवर्तन भ्रमजन्य भी कहा जा सकता है। पर साथ-साथ, इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि उच्चतम ज्ञान किसी भी भाषा में हो, वह अपौरुषेय वेद ही है। परिवर्तन उसके व्यवहार-कौशल, कर्म-काण्ड आदि में होता है, हुआ भी है। इसे ही हम समय की आवश्यकता कहते हैं। भाषा जिस प्रकार अर्थ-साम्य रखने पर भी स्वरूपतः बदलती गई है, अथवा भिन्न देशों में, भिन्न परिस्थितियों के कारण अपर देशों की भाषा से बिलकुल भिन्न प्रतीत होती है, इसी प्रकार धर्म भी समयानुसार जुदा-जुदा रूप ग्रहण करता गया है। भारत के लिए यह विशेष रूप से कहा जा सकता है। बुद्ध, शंकर, रामानुज आदि के धर्ममत-प्रवर्त्तन सामयिक प्रभाव को ही पुष्ट करते हैं। पुराण इसी विशेषता के सूचक हैं। पौराणिक विशेषता और मूर्ति-पूजन आदि से मालूम होता है, देश के लोगों की रुचि अरूप से रूप की ओर ज्यादा झुकी थी। इसीलिए वैदिक अखंड ज्ञान राशि को छोड़कर ऐश्वर्यगुणपूर्ण एक-एक प्रतीक लोगों ने ग्रहण किया। इस तरह देश की तरक्की नहीं, यह बात नहीं। पर इस तरह देश ज्ञान-भूमि से गिर गया, यह बात भी है। जो भोजन शरीर को पुष्ट करता है, वही रोग का भी कारण होता है। मूर्ति-पूजन से इसी प्रकार दोषों का प्रवेश हुआ। ज्ञान जाता रहा। मस्तिष्क से दुर्बल हुई जाति औद्धत्य के कारण छोटी-छोटी स्वतंत्र सत्ताओं में बँटकर एक दिन शताब्दियों के लिए पराधीन हो गई। उसका वह मूर्ति-पूजन-संस्कार बढ़ता गया। धीरे धीरे वह ज्ञान से बिलकुल ही रहित हो गई। शासन बदला, अंग्रेज आए। संसार की सभ्यता एक नये प्रवाह से बही। बड़े-बड़े पंडित विश्व-साहित्य, विश्व ज्ञान, विश्व-मैत्री की आवाज उठाने लगे, पर भारत उसी प्रकार पौराणिक रूप से माया-जाल में भूला रहा। इस समय ज्ञान-स्पर्धा के लिए समय को फिर आवश्यकता हुई, और महर्षि दयानन्द का यही अपराजित प्रकाश है। वह अपार वैदिक ज्ञानराशि के आधार-स्तम्भ-स्वरूप अकेले बड़े-बड़े पंडितों का सामना करते हैं। एक ही आधार से इतनी बड़ी शक्ति का स्फुरण होता है कि आज भारत के युगान्तर साहित्य में इसी की सत्ता प्रथम है, यही जन संख्या में बढ़ी हुई है।

चरित्र, स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि में जो आदर्श महर्षि दयानन्द जी महाराज से प्राप्त होते हैं, उनका लेशमात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा-संभूत नहीं, पुनः ऐसे आर्य में ज्ञान तथा कर्म का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वयं इसके उदाहरण हैं। मतलब यह है कि जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नत्तमना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा होता है, महर्षि दयानन्द सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खंडन हैं। महर्षि दयानन्द जी से बढ़कर भी मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता। यही वैदिक ज्ञान की मनुष्य के उत्कर्ष में प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है, यहीं आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है।

यहाँ से भारत के धार्मिक इतिहास का एक नया अध्याय शुरू होता है, यद्यपि वह बहुत ही प्राचीन है। हमें अपने सुधार के लिए क्या-क्या करना चाहिए, हमारे सामाजिक उन्नयन में कहाँ-कहाँ और क्या-क्या रुकावटें हैं, हमें मुक्ति के लिए कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। आर्य समाज की प्रतिष्ठा भारतीयों में एक नये जीवन की प्रतिष्ठा है, उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है। देश में महिलाओं, पतितों तथा जातिपाँति के भेद-भाव को मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज से बढ़कर इस नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जो जागरण भारत में दीख पड़ता है, उसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्य समाज को है। स्वधर्म में दीक्षित करने का यहाँ इसी समाज से श्रीगणेश हुआ है। भिन्न जाति वाले बन्धुओं को उठाने तथा ब्राह्मण-क्षत्रियों के प्रहारों से बचने का उद्यम आर्यसमाज ही करता रहा है। शहर-शहर, जिले-जिले, कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण, आर्यसमाज की स्थापना हो गई। राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी स्वामी जी एक प्रवर्तक हैं, और आर्यसमाज के प्रचार की तो यह भाषा ही रही है। अनेक गीत खिचड़ी शैली के तैयार किये गये और गाए गए। शिक्षण के लिए 'गुरुकुल' जैसी संस्थाएँ निर्मित हो गईं। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा।

स्वामी जी के प्रचार से कुछ पहले ब्रह्मसमाज की कलकत्ता में स्थापना हुई थी। राजा राममोहनराय द्वारा प्रवर्तित ब्राह्मधर्म की प्रतिष्ठा, वैदान्तिक बुनियाद पर, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर कर चुके थे। वहाँ इसकी आवश्यकता इसलिए हुई थी कि अंग्रेजी सभ्यता की दीप-ज्योति की ओर शिक्षित नव युवकों का समूह पतंगों की तरह बढ़ रहा था, पुनः शिक्षा तथा उत्कर्ष के लिए विदेश की यात्रा करना अनिवार्य थी, पर लौटने पर वे शिक्षित युवक यहाँ ब्राह्मणों द्वारा धर्म-भ्रष्ट कहकर समाज से निकाल दिये जाते थे, इसलिए वे ईसाई हो जाते थे, उन्हें देश के ही धर्म में रखने की जरूरत थी। इसी भावना पर ब्राह्मधर्म की प्रतिष्ठा तथा प्रसार हुआ। विलायत में प्रसिद्धि प्राप्त कर लौटने वाले प्रथम भारतीय वक्ता श्रीयुत केशवचन्द्र सेन भी ब्राह्मधर्म के प्रवर्तकों में एक हैं। इन्हीं से मिलने के लिए स्वामी जी कलकत्ता गये थे। यह जितने अच्छे विद्वान अंग्रेजी के थे, उसत अच्छे संस्कृत के न थे। इनसे बातचीत में स्वामी जी सहमत नहीं हो सके। कलकत्ता में आज ब्राह्मसमाज-मंदिर के सामने, कार्नवालिस स्ट्रीट पर विशाल आर्य समाज मंदिर भी स्थित है।

किसी दूसरे प्रतिभाशाली पुरुष से और जो कुछ उपकार देश तथा जाति का हुआ हो, सबसे पहले वेदों को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही हमारे सामने रक्खा। हम आर्य हों, हिन्दू हों, ब्राह्मसमाज वाले हों, यदि हमें ऋषियों की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व कर सकते हैं, तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान राशि वेदों से परिचित कर दिया।

देश में विभिन्न मतों का प्रचलन उसके पतन का कारण है, स्वामी दयानन्द जी की यह निर्भ्रान्त धारणा थी। उन्होंने इन मत-मतान्तरों पर सप्रमाण सबल आक्षेप भी किये हैं। उनकी इच्छा थी कि इस मतवाद के अज्ञान-पंक से देश को निकालकर वैदिक शुद्ध शिक्षा द्वारा निष्कलंक कर दें।

वाममार्ग वाले तांत्रिकों की मन्द वृत्तियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा है कि मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन आदि वेद-विरुद्ध महा अधर्म कार्यों को वाममार्गियों ने श्रेष्ठ माना है। जो वाममार्गी कलार के घर बोतल पर बोतल शराब चढ़ावे और रात्रि को वारांगना से दुष्कर्म करके उसी के घर सोवे, वह वाममार्गियों में सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती राजा के समान है। स्त्रियों के प्रति विशद कोई भी विचार उनमें नहीं। स्वामी जी देशवासियों को विशुद्ध वैदिक धर्म में दीक्षित हो आत्मज्ञान ही-सा उज्ज्वल और पवित्र कर देना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द ने भी वामाचारभक्त देश के लिए विशुद्ध भावन वाले वैदांतिक धर्म का उपदेश दिया है।

आपने गुरु-परम्परा को भी आड़े हाथों लिया है। योगसूत्र के 'स

(शेष पृष्ठ ३ पर...)

विनय पीयूष

दिव्य ज्योति से करो प्रकाशित !

अया पवस्य धारया
यया सूर्यमरोचयः।
हिन्वानो मानुषीरयः।। *(साम.पू. 6/3/4)*

दिव्य ज्योति से करो प्रकाशित!

जिसका आरोपण
होता है
और सूर्य रोचन
होता है,

करो कर्म मानव के अपनी
उसी ज्योति से पावन, प्रेरित!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

सम्पादकीय

मोदी-दर्शन

प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी ने देश के विकास को न कि केवल एक सुविचारित दिशा दी है; वरन् एक 'दर्शन' भी देने का प्रयास किया है; जिसे हम 'मोदी-दर्शन' कह सकते हैं। 'मोदी दर्शन' के १८ सूत्र हैं- जिन्हें 'मोदी के मंत्र' के नाम से 'दैनिक जागरण' ने अपने २८.११.२०१५ के अंक में प्रकाशित किया है। मोदी जी के १८ मंत्र उस युग की उपज हैं, जब आधुनिक युग के नाना प्रकार के मत पंथों का उद्भव नहीं हुआ था और विश्व सुख शांति, संतोष की सांसे भर रहा था और भारत के चरणों में प्रणत था; जैसा कि आचार्य मनु कहते हैं-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

यह वह समय था जब पृथ्वी के समस्त मानव भारतीय विचारकों के चरणों में बैठकर ज्ञान, शिक्षा और मार्गदर्शन प्राप्त करते थे। अतः मोदी के १८ मंत्र प्रत्येक भारतवासी के लिए मान्य हैं।

मोदी के १८ मंत्रों में पहली पायदान पर है-'सत्यमेव जयते' और अंतिम अर्थात् १८वीं पायदान पर है-'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' मोदी जी का अटूट विश्वास है कि भारत का प्रत्येक नागरिक जबतक अंतिम मंत्र (विचार) को आयत्त नहीं करेगा तब तक राष्ट्रीय एकता और विश्वशांति का स्वप्न सत्य नहीं हो सकेगा। १८वां मंत्र लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करता है। १७वाँ मंत्र है-'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः' (यजुर्वेद, २५/१४) अर्थात् अहिंसक सौमनस्य और सौहार्द से परिपूर्ण भद्राः श्रेष्ठ उत्तम (क्रतवो) विचार हमें (आ) भलीभांति (विश्वतः) सभी ओर से (यन्तु) प्राप्त होते रहें।

'विचारो हि मनुष्याणां प्रतिमानः-विचार ही मनुष्य की पहचान हैं। विचार ही मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत है। आज भारत को सबसे अधिक आवश्यकता उत्तम विचारों की है। श्रेष्ठ विचार से ही राष्ट्र समृद्ध और विकसित होते हैं। तथा निकृष्ट विचारों से राष्ट्र पराभव की ओर बढ़ता है और एक दिन वह आता है जब वह गुलामी की जंजीरों में जकड़ जाता है। आज जितनी द्रुतगति से भारत का भौतिक विकास हो रहा है उतनी ही द्रुत गति से नैतिक और वैचारिक पतन भी हो रहा है। जन सामान्य की समझदारी में कमी आती जा रही है।

प्रश्न यह है कि आज की परिस्थितियों में भारतवासियों के सर्वोत्तम विचार क्या हो सकता है? इस प्रश्न का उत्तर मोदी का मंत्र संख्या १८ आसानी से दे देता है। आज की परिस्थितियों में भारत के लिए जिस विचार की सर्वाधिक आवश्यकता है वह है -'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। हे जन्मभूमि माता ! तुम स्वर्ग से भी महान् हो।' यह सूक्ति वेदमंत्र तो नहीं है किन्तु वेदमंत्र से भी बढ़कर है। वैदिक सूक्ति तो यह है-'माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'। हम इस पृथ्वी माता के पुत्र हैं। किन्तु 'जननी जन्मभूमि' से सम्बंधित उपर्युक्त सूक्ति लाखों वर्षो से भारतीयों को प्रेरणा और शक्ति देती रही है। इस सूक्ति का संदर्भ क्या है? प्रसंग क्या है? और इसका रचयिता कौन है? यह जानना जरूरी है। यह सूक्ति महर्षि वाल्मीकि की अमर रचना है। कहते हैं जब स्वर्णमयी लंका नगरी पर विजयपताका फहराकर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अयोध्या अर्थात् भारत की ओर चलने लगे तो अनुज लक्ष्मण ने सुझाव दिया- 'बड़े भैया, क्यों न हम लंका में ही बस जायें। भारत यानी अयोध्या जाने का विचार ही त्याग दें।' तो मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कहते हैं-

अपि स्वर्णमयी लंका, न में लक्ष्मण! रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

हे लक्ष्मण! भले ही लंका स्वर्णमयी क्यों न हो, यह हमें रुचिकर नहीं है, हमारे लिए तो जननी जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। महर्षि वाल्मीकि ने यदि पूरी रामायण न भी लिखी होती तो यह सूक्ति ही उनको अमरत्व पद पर प्रतिष्ठित करने हेतु पर्याप्त है।

यह हमारा देश तो एक ऐसा देश है कि जिसकी अर्चना, वंदना और जहां जन्म लेने को देवता भी तरसते हैं- 'गायन्ति देवा किल गीतिकानि, धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे।' और तो और डॉ.इकबाल मुहम्मद ने भारत भूमि का गुणगान करते हुए कहा था-

टूटे थे जो सितारे, फारस के आसमाँ से,
फिर आब दे के जिसने चमकाये कहकशाँ से
वहदत की लय सुनी थी दुनिया ने जिस मकां से
मीरे अरब को आई ठंडी हवा जहां से
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

भारत की ओर से आने वाली ठंडी हवाओं से जब मीरे अरब को शान्ति और संतोष की प्राप्ति होती थी, तो फिर भला किसी भारतवासी को विदेशों की ओर प्रेरणा लेने के लिए निहारने की जरूरत क्या है?

हम सभी को एकता के सूत्र में आबद्ध होकर 'आइडिया ऑफ इण्डिया' अर्थात् मोदी जी का १८वां मंत्र भारतभूमि को सर्वोपरि, सर्वोत्तम, सर्वोपम और सर्वोत्कृष्ट मानने की प्रेरणा दे रहा है। भारतीय संस्कृति के अप्रतिम गायक कविवर जयशंकर 'प्रसाद' की पंक्तियाँ इसी भाव को अभिव्यंजित करती हैं-

जियें तो सदा इसी के लिए,
यही अभिमान रहे यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व,
हमारा प्यारा भारत वर्ष।।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१६३

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

वेद-विषय

(प्रश्न) वेद संस्कृतभाषा में प्रकाशित हुए और वे अग्नि आदि ऋषि लोग उस संस्कृतभाषा को नहीं जानते थे फिर वेदों का अर्थ उन्होंने कैसे जाना?

(उत्तर) परमेश्वर ने जनाया। और धर्मात्मा योगी महर्षि लोग जब-जब जिस-जिस के अर्थ को जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए तब-तब परमात्मा ने अभीष्ट मन्त्रों के अर्थ जनाये, जब बहुतों के आत्माओं में वेदार्थप्रकाश हुआ तब ऋषि मुनियों ने वह अर्थ और ऋषि मुनियों के इतिहासपूर्वक ग्रन्थ बनाये। उनका नाम ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्म जो वेद उसका व्याख्यान ग्रन्थ होने से ब्राह्मण नाम हुआ। और-

ऋषयो मन्त्रदृष्टयः मन्त्रान्सम्प्रादुः।

जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन जिस-जिस ऋषि को हुआ और प्रथम ही जिसके पहिले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था; किया और दूसरों को पढ़ाया भी। इसलिये अद्यावधि उस-उस मन्त्र के साथ ऋषि का नाम स्मरणार्थ लिखा आता है। जो कोई ऋषियों को मन्त्रकर्त्ता बतलावें उनको मिथ्यावादी समझें। वे तो मन्त्रों के अर्थप्रकाशक हैं।

(प्रश्न) वेद किन ग्रन्थों का नाम है?

(उत्तर) ऋक्, यजुः, साम और अथर्व मन्त्रसंहिताओं का; अन्य का नहीं।

(प्रश्न) **मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।।** इत्यादि कात्यायनादिकृत प्रतिज्ञासूत्रादि का

अर्थ क्या करोगे?

(उत्तर) देखो! संहिता पुस्तक के आरम्भ अध्याय की समाप्ति में वेद यह सनातन से शब्द लिखा आता है ब्राह्मण पुस्तक के आरम्भ वा अध्याय की समाप्ति में कहीं नहीं लिखा। और निरुक्त में-

इत्यमपि निगमो भवति। इति ब्राह्मणम्।।
छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि।।

यह पाणिनीय सूत्र है- इससे भी स्पष्ट विदित होता है कि वेद मन्त्रभाग और ब्राह्मण व्याख्याभाग हैं। इसमें जो विशेष देखना चाहें तो मेरी बनाई 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' में देख लीजिये। वहां अनेक प्रमाणों से विरुद्ध होने से यह कात्यायन का वचन नहीं हो सकता ऐसा ही सिद्ध किया गया है। क्योंकि जो माने तो वेद सनातन कभी नहीं हो सकें क्योंकि ब्राह्मण पुस्तकों में बहुत से ऋषि महर्षि और राजादि के इतिहास लिखे हैं और इतिहास जिसको हो उसके जन्म के पश्चात् लिखा जाता है। वह ग्रन्थ भी उसके जन्मे पश्चात् होता है। वेदों में किसी का इतिहास नहीं किन्तु विशेष जिस-जिस शब्द से विद्या का बोध होवे उस-उस शब्द का प्रयोग किया है। किसी मनुष्य की संज्ञा वा विशेष कथा का प्रसंग वेदों में नहीं।

(प्रश्न) वेद की कितनी शाखा हैं?

(उत्तर) एक हजार एक सौ सत्ताईस।

(प्रश्न) शाखा क्या कहाती है?

(उत्तर) व्याख्यान को शाखा कहते हैं।

(प्रश्न) संसार में विद्वान् वेद के अवयवभूत विभागों को शाखा मानते हैं?

(उत्तर) तनिक सा विचार करो तो ठीक। क्योंकि जितनी शाखा हैं वे आश्वलायन आदि ऋषियों के नाम से प्रसिद्ध हैं और मंत्रसंहिता परमेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। *(क्रमशः)*

वेद प्रवचन

राष्ट्र को दुरित, दुर्गति से बचाने का उपाय

□पं.शिव कुमार शास्त्री, भू.पू.संसद सदस्य

न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम्।
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः।।

(साम 426)

शब्दार्थ-

(सजोषसः) प्रेम सेवा में तत्पर **(देवासः)** विद्वान् **(यम्)** जिस प्रजा को **(अर्यमा)** न्यायकारी **(मित्रः)** सर्वहितकारी **(वरुणः)** श्रेष्ठ गुणों वाला राजा **(द्विषः)** शत्रुओं को **(अतिनयति)** दमन करके शासन करता है। **(तम्)** उस जन को **(अंहः)** पाप **(न अष्ट)** नहीं घेरता **(न दुरितम्)** न पापजनित दुःख ही सताते हैं।

व्याख्या-

मंत्र में उत्तम शासन के लिए तीन बातें आवश्यक बताई गई हैं। पहली बात यह कि-'शासन में न्याय ठीक-ठीक और समय पर हो।' दूसरी बात यह कि-'राजा अथवा शासक-वर्ग सारी प्रजा को निज सन्तान समझकर प्रेम से व्यवहार करनेवाला हो।' तीसरी बात यह कि-'शत्रुओं से राष्ट्र की रक्षा करने वाला हो।' ये तीन बातें जिस शासन में होंगी, उसमें **'अंहः दुरितम् न अष्ट'** पाप, दुर्गति और अशान्ति कभी नहीं होगी।

वेद के इस मंत्र में भारत के मानसिक नभोमण्डल में छाई इन निराशा की काली बदलियों को छांटने के ही महत्वपूर्ण उपाय हैं। इनमें पहला उपाय है-देश के वायुमण्डल को शुद्ध करने के लिए न्याय प्रणाली पक्षपात-रहित और शीघ्र निर्णय करने वाली होनी चाहिए। आज देश में अपराधों की बाढ़-सी आ रही है। डाके, बलात्कार, हत्या और चोरी के समाचारों से अखबार पटे पड़े रहते हैं; डाकुओं में अपठित और गरीबी से पीड़ित लोग ही नहीं हैं, बी.ए. और एम.ए. हैं। नई दिल्ली में बैंक खजाने को लूटने वाले सम्पन्न घरों के और उच्च शिक्षा प्राप्त युवक ही थे। इन बुराइयों के बढ़ने में कतिपय अन्य कारणों के साथ सबसे बड़ा मुख्य कारण न्याय-प्रणाली की शिथिलता, न्याय की अतिव्यय-साध्यता, अपराधियों को मुक्त कराने के लिए राजनैतिक नेताओं के दबाव आदि कुछ ऐसे कारण हैं कि जिनसे अपराधियों को दण्ड का भय नहीं रहा।

हमें जो अंग्रेजों का ढांचा उपहार में मिला है, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र है और चाहे न्यायालय है, हम उन्हें उसी प्रकार घसीटे ले जा रहे हैं। इससे कितनी हानि हो रही है, यह विचारने और कम करने का समय किसी के पास नहीं है। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री जब पहली बार पद सम्भालते हैं, तो बड़ी बड़ी योजनाएं जनता के सम्मुख रखते हैं, किन्तु कुछ ही समय पश्चात् कहीं पार्टी के असन्तुष्ट तत्वों को अनुकूल बनाने में, कहीं विरोधी पार्टी की योजनाओं को ध्वस्त करने में संक्षेप में कहा जाय तो सारा समय और शक्ति अपने अधिकार की रक्षा में ही निकल जाता है। सामाजिक जीवन के परिष्कार के लिए कुछ रचनात्मक काम नहीं हो पाते।

हमारी न्याय-पद्धति ईसाइयों की भावना से प्रभावित है, जिसके चिन्तन का मुख्य केन्द्र विन्दु यह है कि पाप के फल, दुःख से संसार को छुड़ाने के लिए मसीह शूली पर चढ़ गए। किसी के मन को दुःख नहीं होना चाहिए। किसी उर्दू शायर के शब्दों में उनकी भावना को इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है-

जब गुनहगारों पे देखी रहमते-परवरदिगार।
बेगुनाहों ने पुकारा हम गुनहगारों में हैं।।

'जब अपराधियों पर प्रभु का विशेष कृपाभाव देखा तो शुद्ध-पवित्र व्यक्ति भी सोचने लगे कि हमसे तो ये ही अच्छे रहे, और वे निर्दोष होते हुए भी प्रभु के कृपापात्र बनने के लिए चिल्लाने लगे-हम भी पापी हैं, हमारा भी उद्धार कीजिए।'

तो मंत्र में पहली बात कही गई कि न्याय शीघ्र, सुलभ और निष्पक्ष होना चाहिए।

मंत्र की दूसरी बात है कि शासक-वर्ग प्रजा को अपनी सन्तान के समान प्रिय समझें जैसा कि कालिदास ने रघु के राज्य का वर्णन करते हुए लिखा है- **'स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः'**- 'समस्त प्रजा का वास्तविक पिता रघु ही था, उनके माता-पिता तो केवल जन्म देने वाले थे।' ऐसे आत्मीयता के वातावरण में प्रजाजन राष्ट्र की रक्षा के लिए बड़े-से-बड़े त्याग करने को उद्यत हो जाते हैं।

रामायण और महाभारत में हम पढ़ते हैं कि जब राम और पाण्डव वन को चले तो पीछे-पीछे प्रजा के लोग भी साथ चल दिये। यह आत्मीयता का सम्बन्ध शासकों के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का ही परिणाम था। तो मंत्र में परामर्श दिया कि शासक-वर्ग परिवार के समान आत्मीयता से जनता के साथ बरतें।

मंत्र की तीसरी बात है शासक आक्रान्ता और शत्रुओं से राष्ट्र की रक्षा करते वाला हो। राष्ट्रीय सेना दक्ष और शक्तिसम्पन्न हो, जो शत्रु को मुंहतोड़ उत्तर दे सके। यह शक्ति तभी आएगी, जब संयमी और वीरपुरुष राष्ट्र की रक्षापंक्ति संभालेंगे। विलासी और ऐय्याश राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकते। मुगल शासन के अन्तिम दिनों में इसी तरह के दुर्गुणों से राष्ट्र दुर्बल हो गया और विदेशी आक्रान्ता यहां की प्रजा को अपमानित करे यहां की अपार सम्पत्ति, कोहेनूर और तख्तेताऊस तक को यहां से ले गए थे। इस प्रकार के दुर्बल राष्ट्र में अन्यान्य दोष भी आ जाते हैं। यदि देश के प्रहरी संयमी, देशभक्त और वीर हों तो ऐसे राष्ट्र में पाप और अशान्ति नहीं होती। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-८६

विलुप्ता मर्यादा परिहतमहो गौरवमपि
भविस्यच्चातीतं सकलमपि लुप्तं नयनयोः।
सुखं वा दुःखं परवशगतं शून्यमनसां
पराधीनान् खिन्नान् यतिवर! सदाश्वासयसि नः।।

हे यतिवर ! हे संन्यासी !
हम तेरे ही आश्वासनों के सहारे
जीवित हैं !
हमारी मर्यादायें क्षीण हो चुकी थीं।
हमारा अतीत का गौरव
छीन लिया गया था।
हमारी आंखों के सामने से
भविष्य और अतीत
दोनों ही लुप्त हो गये थे।
हमारा सुख और दुःख
दोनों ही दूसरों के वश में था।
हमारे मन सूने-सूने थे।
हम पराधीन और टूटे हुए
तेरे ही भरोसे जीवित हैं।।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

होता सदस्य परिचय-52

स्वाध्याय के ज्योति स्तम्भ

श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी

आर्य समाज आदर्शनगर, लखनऊ के स्वाध्यायशील, शालीन एवं वैदिक सिद्धान्तों के पारंगत विद्वान् श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी का जन्म 30 नवम्बर 1933 को हुसैनगंज लखनऊ में हुआ था। आपके पूज्य पिता श्री त्रिवेनी सहाय जौहरी आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ के सभासद थे तथा उ.प्र. सचिवालय से वर्ष 1944 में सेवानिवृत्त हुए थे। माता श्रीमती गंगादेवी जौहरी ने स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लिया था तथा उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पेंशन लेना अस्वीकार कर दिया था।

श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी के जीवन पर स्व.नारायणदीन जौहरी, बरेली का विशेष प्रभाव पड़ा, जो एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। श्री जौहरी उन्हें अपना धर्मपिता स्वीकार करते हैं।

श्री जौहरी 1987 में आर्यसमाज आदर्शनगर, लखनऊ के सदस्य बने तथा समय समय पर विभिन्न पदों को सुशोभित किया। 1995-96 में आप आर्यसमाज आदर्शनगर के प्रधान निर्वाचित हुए तथा समाज के गौरव की अभिवृद्धि में अपना विशिष्ट योगदान प्रस्तुत किया। आपके कार्यकलापों से प्रभावित होकर 1996-97 में आपको आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ (जिला सभा) का प्रधान चुना गया और सफलतापूर्वक आपने जिलासभा की गतिविधियों का संचालन किया।

आर्यसमाज आदर्शनगर के अभ्युत्थान में श्री जौहरी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आप उ.प्र.सरकार के चिकित्सा विभाग में कार्यरत रहे तथा अपने कार्यकाल में विशेष रूप में बलरामपुर चिकित्सालय तथा सिविल अस्पताल में रोगियों की निःस्वार्थ सेवा का अनुकरणीय उदाहरण आपने प्रस्तुत किया। 1991 में चिकित्सा विभाग की सेवा से निवृत्त होने के बाद आपने आर्य समाज आदर्शनगर को अपने कार्य का केन्द्र बनाया तथा एक आदर्श, स्वाध्यायनिष्ठ आर्य सभासद के रूप में अपनी मान्यता स्थापित की।

वस्तुतः स्वाध्याय एवं साधना जौहरी परिवार की मूलभूत विशेषता है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती चित्रा जौहरी भी एक स्वाध्यायशील विदुषी धर्म परायणा देवी हैं। निरन्तर अपने पति की सेवा सुश्रूषा में संलग्न रहती हैं। आपके अग्रज स्व. वी.पी.जौहरी (निराला नगर, लखनऊ) भी उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् थे। 'आर्य लोक वार्ता' में उनकी गहरी निष्ठा थी। स्व. वी.पी. जौहरी अपनी मृत्यु से एक दिन पूर्व 'आर्य लोक वार्ता' कार्यालय में आकर सहयोग राशि देना नहीं भूले।

श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी के सम्बन्ध में आर्य समाज आदर्श नगर के वर्तमान प्रधान श्री आत्मप्रकाश बत्रा कहते हैं-

"श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी एवं उनकी पत्नी श्रीमती चित्रा जौहरी आर्यसमाज आदर्शनगर लखनऊ के वरिष्ठ सदस्य एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं। स्वाध्याय उनके जीवन को आभामंडित कर देता है। यद्यपि आजकल वे अस्वस्थ रहते हैं, तथापि स्वाध्याय, विद्वानों का सत्कार और दानशीलता में वे कभी पीछे नहीं रहते। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रति उनकी निष्ठा हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।"

(आ.लो.वा.)

(पृष्ठ 1 का शेष......)

भारत जागरण....

पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्' के अनुसार, आप केवल ब्रह्म को ही गुरु स्वीकार करते हैं। रामानुज-जैसे धर्माचार्य का भी मत आपको मान्य नहीं, और बहुत-कुछ युक्तिपूर्ण भी जान पड़ता है। आपका कहना है कि लक्ष्मीयुक्त नारायण की शरण जाने का मन्त्र धनाढ्य और माननीयों के लिए बनाया गया-यह भी एक दुकान ठहरी।

स्वामी जी के व्यंग्य बड़े ही उपदेश पूर्ण हैं। आर्य-संस्कृति के लिए आपने निःसहाय होकर भी दिग्विजय किया, और उसकी समुचित प्रतिष्ठा की। स्वामी जी का सबसे बड़ा महत्व यह है कि उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा की ओर नहीं देखा, वेदों की प्रतिष्ठा की है। ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज के सम्बन्ध में आपका कहना है- 'ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज के नियम सर्वांश में अच्छे नहीं, क्योंकि वेदविद्याविहीन लोगों की कल्पना सर्वथा सत्य क्योंकर हो सकती है? जो कुछ ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाया और कुछ कुछ पाषाण आदि मूर्तिपूजा से हटाया, अन्य जाल ग्रन्थों के फन्दे से भी कुछ बचाया इत्यादि अच्छी बातें हैं। परन्तु इन लोगों में स्वदेशभक्ति बहुत न्यून है, ईसाइयों के आचरण बहुत से लिये हैं। खान-पान-विवाहादि के नियम भी बदल गए हैं। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करना तो दूर रही, उसके स्थान में पेट-भर निन्दा करते हैं, व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर-पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान नहीं हुआ, आर्यावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आए हैं उनकी उन्नति कभी नहीं हुई। वेदादिकों की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नहीं रहते, ब्रह्मसमाज के उद्देश्य की पुस्तक में साधुओं की संख्या में 'ईसा', 'मूसा', 'मुहम्मद' नानक और चैतन्य लिखे हैं, किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नहीं लिखा।

आज शिक्षित सभी मनुष्य जानते हैं, भारत के अधःपतन का मुख्य कारण नारी जाति का पीछे रह जाना है, वह जीवन-संग्राम में पुरुष का साथ नहीं दे सकती, पहले से ऐसी निरवलंब कर दी जाती है कि उसमें कोई क्रियाशीलता नहीं रह जाती, पुरुष के न रहने पर सहारे के बिना तरह-तरह की तकलीफें झेलती हुई वह कभी-कभी दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेती है, आदि-आदि। पं.लक्ष्मण शास्त्री द्रविड़-जैसे पुराने और नए पंडित अनुकूल तर्क-योजना करते हुए, प्रमाण देते हुए यह नहीं मानते कि भारत की स्त्रियाँ उसके पराधीन काल में भी किसी दूसरे देशों की स्त्रियों से उचित शिक्षा, आत्मोन्नति, गार्हस्था सुख विज्ञान, संस्कृति आदि में घटकर हैं। इसी तरह धर्म और जाति के सम्बन्ध में उनकी वाक्यावली, आज के अंग्रेजी शिक्षित युवकों को अधूरी जंचने पर भी, निरपेक्ष समीक्षकों के विचार में मान्य ठहरती है। फिर भी, हमें यहां यह देखना है कि आजकल के नवयुवक समुदाय से महर्षि दयानन्द, अपनी वैदिक प्राचीनता लिए हुए भी, नवीन सहयोग कर सकते हैं या नहीं। इससे हमें मालूम होगा हमारे देश के ऋषि जो हजारों शताब्दियों पहले सत्य-साक्षात्कार कर

(शेष पृष्ठ ६, कालम ३ पर...)

वाचनालय से

मिडिल ईस्ट मीडिया रिसर्च इंस्टीट्यूट, वाशिंगटन से सम्बद्ध तुफैल अहमद का विचारपरक लेख 'जिहाद के खिलाफ छह कदम' **दैनिक जागरण** ने प्रमुखता के साथ सम्पादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित किया है। लेख में तुफैल अहमद लिखते हैं कि बरेली में नौ दिसम्बर को मुफ्ती मोहम्मद सलीम नूरी और हज़रत सुभान रज़ा के नेतृत्व में बरेलवी के मौलवियों ने 'आइ एस आइ एस' तालिबान और अलकायदा के खिलाफ यह कहते हुए फतवा जारी किया कि ये 'मुसलमान' नहीं हैं। मुफ्ती नूरी ने कहा कि ६ दिसम्बर से जब सालाना उर्स शुरू हुए, दरगाह आला हज़रत के सदस्य आतंकवाद के खिलाफ एक हस्ताक्षर अभियान चला रहे हैं। करीब १५ लाख मुसलमानों ने अपना विरोध दर्ज कराया है। इस काम में शामिल दुनिया भर के करीब ७० हजार मौलवियों ने यह फतवा जारी किया है। इन फतवों का स्वागत किया जाना चाहिए, लेकिन वे अहम नहीं हैं।

तुफैल अहमद लिखते हैं कि इस तरह के फतवों के संदेश मुस्लिम युवाओं को आकर्षित नहीं करते, क्योंकि ये फतवे 'आइ एस आइ एस' और 'अलकायदा' के खिलाफ तो हैं लेकिन उन इस्लामी धर्मसिद्धान्तों के खिलाफ नहीं हैं जो मदरसों, मस्जिदों और जलसों (धर्म-सम्मेलनों) में मुसलमानों को पढ़ाये जाते हैं। इसलिये अल-कायदा, तालिबान और आइ एस आइ एस के खिलाफ फतवा जारी करने की जगह बरेलवी और देवबन्दी विद्वानों को एक मंच पर आने और सभी तरह के जिहादियों के खिलाफ मेरे छह सूत्री फतवे को समर्थन देने की जरूरत है। मेरा छह सूत्री फतवा इन बातों की घोषणा करता है-

(१) हम सभी शियाओं को मुसलमान मानते हैं।

(२) हम सभी अहमदियों को मुसलमान मानते हैं।

(३) पैगम्बर मुहम्मद साहब एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व थे और इसलिये गैर मुसलमानों, मुस्लिम पत्रकारों और शिक्षाविदों को उनके सन्देशों की आलोचनात्मक व्याख्या करने का अधिकार है।

(४) धर्मत्याग पर शरिया आधुनिक समय के लिये औचित्यपूर्ण नहीं है और इस्लाम छोड़ने के इच्छुक मुसलमान की हत्या नहीं की जायेगी।

(५) किसी मुस्लिम देश के किसी भी गैरमुस्लिम नागरिक को शासन-प्रमुख बनने की अनुमति दी जायेगी। यह महत्वपूर्ण बिन्दु है, क्योंकि पाकिस्तान, साउदी अरब, मालदीव जैसे कई इस्लामी देश शासन-प्रमुख बनने के लिये अपने गैरमुस्लिम नागरिकों को अनुमति नहीं देते।

(६) इस्लामी शरियो के धर्मसिद्धान्तों के अनुरूप ही किसी मुस्लिम महिला को शासन-प्रमुख बनने की अनुमति होगी।

मासिक **'वैदिक संसार'** (इंदौर) ने महात्मा चैतन्यमुनि का तर्कप्रधान लेख 'ईसाई-मत में स्वर्ग की अनर्गल कल्पना' प्रकाशित किया है। चैतन्य मुनि लिखते हैं कि स्वर्ग-नरक के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ प्रचलित हैं। अधिकतर लोग स्वर्ग तथा नरक कोई स्थान विशेष ही समझते हैं।...अलग अलग मत-मजहबों ने अपने-अपने स्वर्ग तथा नरक की मान्यताएँ स्थापित कर रखी हैं।

बाइबिल में स्वर्ग को पृथ्वी के ऊपर कहीं आकाश में माना गया है। ईसाई खुदा यहोवा वहाँ रहता है। उसके रहने को बड़ा मकान है। उसमें अनेक दरवाजे हैं। उनमें फाटक लगे हैं। प्रत्येक फाटक पर पहरेदार नियुक्त है। खुदा एक बड़े सिंहासन पर बैठता है। उसका खास इकलौता बेट ईसा (यहूदियों ने जिसे फाँसी दे दी थी) खुदा की दाहिनी ओर तख्त पर बैठता है। ईसाई खुदा ने उसे जमीन का सर्वाधिकार प्रदान कर रखा है। जिसे चाहे ईसा मोक्ष। जिसे चाहे दोजख में डाल दे। यहोवा के यहाँ स्वर्ग में करोड़ों स्वर्ग दूत रहते हैं। बीस करोड़ घुड़सवार सेना। बारह से भी अधिक फौजी पलटनें। खुदा की रक्षा में।

महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में इस प्रकार के स्वर्ग की सार्थक समालोचना की है।...ईसा जंगली मनुष्यों को विश्वास कराने के लिये स्वर्ग में न्यायाधीश बनना चाहता था। यह केवल भोले मनुष्यों को प्रलोभन देने की बात है।

'चन्द्र वसु क्यों है? चन्द्रमा पर जीवन की तलाश' शीर्षक रोचक लेख **'दयानन्द सन्देश'** (मासिक), दिल्ली ने प्रकाशित किया है। लेखक हैं डॉ. महावीर मीमांसक। लेखक के अनुसार चन्द्रमा पर जीवन की खोज में लगे 'नासा' ने चन्द्रमा पर अब पानी को खोजा है, जो जीवन का मूल आधार है किन्तु चारों वेदों ने चन्द्रमा में जल की विद्यमानता लाखों वर्ष पहले बतला दी थी। मंत्र निम्न प्रकार से है-

चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विदन्ति विद्युतो,
वित्तं में अस्य रोदसि।

चारों वेदों में यह मंत्र एक जैसा है। यजुर्वेद में तीसरा चरण भिन्न है। मंत्र का विचारणीय चरण प्रथम ही है, जिसका अर्थ निम्नवत् होगा-

सुन्दर पर्णों (पंखों) वाला चन्द्रमा (जो) पानी में उपश्लिष्ट है, (वह) द्युलोक (आकाश) में दौड़ लगा रहा है। यह तो हुआ शब्दार्थ। व्याख्या बड़े वैज्ञानिक तत्वों से भरपूर है। प्रथम वैज्ञानिक तथ्य तो यह बतलाया गया कि चन्द्रमा पानी (जल) से उपश्लिष्ट है। अभिप्राय है कि चन्द्रमा में (चन्द्रमा के अन्दर या ऊपर) पानी है। दूसरा वैज्ञानिक तथ्य यह बतलाया गया है कि चन्द्रमा आकाश में न केवल गति कर रहा है, अपितु दौड़ रहा है।

मासिक **'आर्य संकल्प'** (पटना) में प्रकाशित अपने लेख 'वेद मंत्रों से आहुति क्यों?' में गंगा शरण आर्य लिखते हैं कि मंत्रोच्चारण से हमारे मन और दिमाग को अपार शक्ति मिलती है।...इसे दो रूपों में अध्ययन किया जा सकता है, शब्दों की ध्वनि व आन्तरिक विद्युत धारा।...मंत्रोच्चारण के समय उत्पन्न आन्तरिक विद्युतधारा इच्छित कार्य करने में सहायक होती है।

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' का संयुक्तांक मिला। वेदोपदेशक और प्रख्यात लेखक उम्मेद सिंह विशारद देहरादून की ईश्वर और भगवान शब्दों की परिभाषा के संबन्ध में मेरी जिज्ञासा का आपने समुचित, सटीक और सन्तोषप्रद समाधान प्रस्तुत किया है। इससे मुझे तो समाधान मिल ही गया- विशारद जी के लेख से जहां जहां भ्रान्ति फैली होगी, उसका भी निराकरण हो गया होगा। आजकल पत्रों में क्या लिखा जा रहा है और मंत्रों पर क्या बोला जा रहा है, कोई देखने वाला नहीं है-

मारग जोइ जा कहँ मनभावा,
पंडित सोई जो गाल बजावा।

इससे पूर्व भी कई अवसरों पर 'आर्य लोक वार्ता' द्वारा ही आर्य समाज की प्रतिष्ठा के अनुरूप उत्तर मिल पाया था। महर्षि दयानन्द के जीवन पर बनाई गई टंकारा परिवार की फिल्म की तीन अंकों में आपकी सुन्दर समीक्षा भी आँखें खोलने वाली थी।

'आर्य लोक वार्ता' के इसी संयुक्तांक में आपके पिताजी पूज्य वैद्यजी का चित्र देखकर पुरानी स्मृतियाँ जागृत हो उठीं। मुझे उनके दर्शनों और वार्तालाप का सौभाग्य मिला था, स्व.वैद्यजी को मेरी श्रद्धांजलि!

हिन्दी साहित्य परिषद सीतापुर के सम्मान समारोह में आपकी बहन श्रीमती रमा आर्य 'रमा' की उपस्थिति हमलोगों के गौरव का कारण बनी। मुझे कार्यक्रम की समाप्ति पर उनके आतिथ्य का सुअवसर मिला। मैं समारोह में आदि से अंत तक मौजूद रहा था।

-वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी'
१५०, नई बस्ती, सीतापुर

***

'आर्य लोक वार्ता' के नवम्बर दिसम्बर (संयुक्तांक) २०१५ के अंक के मुख पृष्ठ पर पं.रघुनन्दन शर्मा जी का लेख ज्ञानवर्द्धक, उपयोगी एवं प्रेरणादायक है। उन्होंने बड़ी कुशलता एवं विद्वत्तापूर्वक यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य का स्वाभाविक भोजन फल-फूल, कन्द आदि है, जिसे सात्त्विक आहार की संज्ञा दी गई है। वास्तव में मनुष्य शाकाहारी प्राणी है। आज अस्वाभाविक एवं असंतुलित आहार ही अधिकांश रोगों को मूल कारण बना हुआ है। आपका सम्पादकीय सटीक, विचारोत्तेजक तथा प्रेम-मिलन-सद्भाव का सत् शिव सुन्दर संदेश देने वाला है। साहित्यकारों को भी इससे सबक लेना चाहिए। 'दयानन्द चरितम्', 'मनुष्य का विराट रूप' तथा 'अनन्त की खोज' पूर्ववत् इस अंक की शोभा बढ़ा रहे हैं। 'काव्यायन' की रचनाएँ प्रायशः मनभावन हैं।

शुभ हो नूतन वर्ष यह, जन-जन करे विकास।
दीप जलें सद्भाव के, फैले नवल उजास।।
मौसम बदले लाख पर, छाई रहे बहार।
आशाओं के गुल खिलें, सपने हों साकार।।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर
जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

सम्पादक जी, सर्वप्रथम आपको शत शत बधाई आपके अनेकों संघर्षों व सफलताओं की। आपके अक्टूबर के सम्पादकीय से ज्ञात हुआ कि आप विद्यार्थी जीवन से ही जुझारू रहे हैं और यही

कारण है कि आप एक योग्य, कुशल व सफल अध्यापक, वक्ता, पत्रकार व सम्पादक हैं। आर्य समाज, देश व समाज के लिए आपकी लेखनी बराबर गतिमान रहे। भारत-चीन युद्ध के समय आजमगढ़ में आपका ओजस्वी भाषण सुना था जिससे ज्ञात है कि आप एक प्रखर वक्ता हैं। भगवान आपको बराबर स्वस्थ रखें कि आपकी लेखनी व वक्तव्यों से समाज का मार्गदर्शन होता रहे।

आपने प्रथम पृष्ठ पर आज के लेखकों, कवियों, विद्वानों को स्मरण कराया है कि पूर्व विद्वानों की भांति- तुलसी, सूर, नरहरिदास, कवि गंग, मैथिली, निराला आदि अनगिनत विद्वानों कवियों का उल्लेख किया है जो निडर होकर अपनी बात रखते थे व देश व समाज को दिशा निर्देश देते थे। अतः आज भी चापलूसी से हटकर, देश व समाज के लिये निडर होकर अपनी विद्वत्ता व लेखनी की शक्ति दिखायें तभी देश में जागरण बढ़ेगा व हमारे देश का तभी तीव्र विकास होगा।

-शिशिर कुमार श्रीवास्तव
सी-३३८/२, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

लखनऊ डालीगंज आर्य समाज के

शताब्दी समारोह में आपके दर्शन हुए थे। आप सदृश विद्वान् लखनऊ आर्य जगत् के प्रकाशस्तम्भ हैं। आप पत्रिका के द्वारा वैदिक धर्म का जो प्रचार कर रहे हैं, वह स्तुत्य है, वन्दनीय है। प्रभु आपको दीर्घायु करें। अस्तु।

-प्रियंवदा वेदभारती
प्राचार्या, कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद, बिजनौर

***

'आर्य लोक वार्ता' का नवम्बर दिसम्बर २०१५ संयुक्तांक पढ़ा। मुख पृष्ठ का लेख 'आर्यों के भोजन में है सात्विक आहार का ही स्थान' अच्छा व उपयोगी है। पृष्ठ २ पर सम्पादकीय में सम्मान लौटाने वाले साहित्यकारों को अच्छी सीख दी है। पृष्ठ ६ पर 'काव्यायन' विभिन्न छन्दों की सुवासित सौम्य वाटिका है जिसमें गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' की 'सम्मान लौटाने वालों से' और दिनेश मिश्र 'राही' की 'दीपमालिका' कुण्डलियों में है तो रुद्र प्रकाश गुप्त 'सरस' की रचना 'दीपपर्व' मनहरण कवित्त व डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर और डॉ.कैलाश निगम ने गजलें प्रस्तुत की हैं। इनके साथ ही ओम प्रकाश आर्य (कोटा, राजस्थान) ने दोहे। साथ ही समाचार भी जानकारी इत्यादि हैं। कुल मिलाकर अंक बहुत ही अच्छा व ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी है। सुन्दर अंक हेतु सम्पादक जी को कोटिशः धन्यवाद।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
३७०/२७, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' के प्रत्येक अंक में डॉ.मिर्जा हसन नासिर के विचार 'शुभाकांक्षा' तथा 'काव्यायन' स्तम्भ में गजलें प्रकाशित होती रहती हैं। पढ़कर चित्त प्रसन्न हो जाता है। मेरे पूज्य पिताजी उर्दू अदब के जाने माने शायर थे और मेरी भी उर्दू साहित्य में गहरी

दिलचस्पी है। डॉ. नासिर साहब की जितनी उर्दू साहित्य में गहरी पैठ है, उतनी ही हिन्दी साहित्य में भी। दोनों भाषाओं का ऐसा सुलझा हुआ मर्मज्ञ मिलना बड़े सौभाग्य की बात है। 'आर्य लोक वार्ता' को यह सौभाग्य प्राप्त है अतएव मैं 'आर्य लोक वार्ता' के सम्पादक को बधाई देना चाहता हूँ।

मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि नासिर साहब की गज़लें साहित्य की समस्त कसौटियों पर खरी उतरती हैं। उनमें गज़ल और हिन्दी गीतों की विशेषताएँ समान रूप से विद्यमान हैं। समय मिलने पर भविष्य में मैं नासिर साहब की शायरी और कवित्त के बारे में विशेष लिखना चाहूँगा।

-कृष्ण स्वरूप चौधरी
विनीत खण्ड-४, गोमती नगर, लखनऊ

***

वस्तुतः आर्य लोक वार्ता : पत्र नहीं

स्वाध्याय है। एक नवीन पारिवारिक अध्याय मानते हुए मैंने आपकी बात को स्वीकार किया है। भावों की पृष्ठभूमि पर, कर्म करने का संकेत देती है पत्रिका।

सतत् भावों का प्रवाह रखती है,
यह आर्य लोक वार्ता पत्रिका।
आई ज्योतिपुंज का बने उत्साह,
विजयश्री के साथ ज्योतिर्मयी जीवन जियें।
पत्रिका रचनात्मक दिशावाहिका बनें।
सत्य शुभसंकेतों को ही जीवन में जनें।
तभी होगा आलोक पर्व की जय।

-अवधेश शुक्ल
हिन्दी साहित्य परिषद, २, ब्रह्मपुरी, सीतापुर

***

'आर्य लोक वार्ता' का नवम्बर दिसम्बर २०१५ अंक समय से प्राप्त हुआ। प्रधान सम्पादक महोदय ने इस अंक के मुख पृष्ठ पर 'वैदिक सम्पत्ति' के लेखक पं.रघुनन्दन शर्मा की प्रस्तुति प्रकाशित कर हम आर्यों का पुनः मार्गदर्शन किया हैं। मुझे विश्वास है कि सुविज्ञ पाठक इस लेख से पूर्ण लाभ उठाएंगे और अपनी जीवन शैली का विकास करेंगे।

'जिज्ञासा और समाधान' स्तम्भ में आपने बहुत ही सुन्दर तरीके से समुचित संदर्भ देकर समझाया है कि वेदों में ईश्वर के अनेकों नामों के अतिरिक्त 'भगवान' शब्द-नाम भी कई स्थानों पर आया है। इस समाधान से बहुत से लोग व विद्वान लाभान्वित होंगे। भगवान या भगवन् किसी भी मनुष्य को सम्बोधित करना मुझे तो अच्छा नहीं लगता है। यदि इसी तरह छूट दी जाती रही तो मनुष्य को प्रभु कहकर भी सम्बोधित करना लोग आरम्भ कर देंगे। हमें परमात्मा के अधिक से अधिक गुणों को अपने जीवन में धारण करना चाहिए फिर भी हम परमात्मा, प्रभु या भगवान नहीं बन सकते। 'वाचनालय से' स्तम्भ में आदरणीय अमृत खरे जी जो पठन सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं वह अनुपम व सराहनीय होती है। हमें उक्त स्तम्भ से अनेकों पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों, लेखों की समीक्षा पढ़कर बहुत संतोष प्राप्त होता है। इस अंक में श्री खरे जी ने श्री तुफैल अहमद के लेख 'सैक्यूलर कबीले के लोग' के द्वारा सत्य को उजागर किया है। 'मदरसों में तिरंगा फहराना जरूरी' तथा मासिक टंकारा समचार पत्रिका में प्रकाशित लेख 'रामायण संस्कृति पर संस्कृति की विजय गाथा' के अंश पढ़कर सभी की भ्रान्तियां दूर होनी चाहिए तथा अन्धविश्वास-पाखण्डों का और अधिक विरोध होना आवश्यक है। श्री खरे जी को साधुवाद। आर्य लोक वार्ता के निरन्तर विकास के लिए प्रभु से प्रार्थना है।

-पाल प्रवीण
एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' अंक नव-दिस. २०१५ के पृष्ठ ८ पर हमारे पूज्यचरण पिता श्रीमान् पं. देवदत्त त्रिपाठी शास्त्री,

आयुर्वेदाचार्य, ग्राम-गोनी, पो-गोंडवा, जिला-हरदोई का चित्र तथा उसके साथ ही सुंदर छंद मेरे भ्राता डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा रचित भी प्रकाशित हुआ है। मैं स्व. पिताजी का चित्र और उनके प्रति लिखित छंद के भावों में खो जाती हूँ। भावविह्वल कर देने वाले उक्त छंद मे कवि ने पिताजी के दस गुणों का उल्लेख किया है, जो उन्हें मानव से महामानव बना देते हैं। वे गुण काल्पनिक न होकर यथार्थ हैं और दस गुणों को पुष्ट करने वाली दस घटनाएं उदाहरण के तौर पर मेरे मानस पटल पर अंकित हैं। ऐसी सुन्दर ममस्पर्शी काव्यरचना के लिए मैं अपने अग्रज भैया डॉ.वेद प्रकाश आर्य का हार्दिक नमन करती हूँ। परमात्मा उनकी लेखनी को निरन्तर दैवी शक्ति प्रदान करता रहे ताकि 'आर्य लोक वार्ता' उत्तरोत्तर विकास से सोपानों पर चढ़ता रहे।

-रामा आर्य 'रमा'
४१७/१०, नेवाजगंज, चौक, लखनऊ

***

मैं पिछले १५ वर्षों से आपका पाठक रहा हूँ। आपसे एक प्रार्थना कर रहा हूँ। स्वीकार करें। मेरी नजर में जो आर्य जगत के पत्र आते हैं उनमें कोई आर्य-पर्वों की सूची नही छापता। आपसे निवेदन है कि आगामी अंक में २०१६ के आर्य-पर्वों की सूची प्रकाशित करने की कृपा करें। मेरी समाज का उत्सव प्रतिवर्ष प्रतिपदा से ३ दिन तक होता है। सूची की प्रतीक्षा में।

-रामचन्द्र गुप्ता (आर्य)
कुतुब नगर, जिला-सीतापुर

(कृपया देखें पृष्ठ सं. ८)

***

सन्तोष का विषय है कि रामपुर

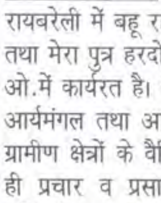

मथुरा में संगठन प्रगति पर है। दो ग्राम प्रधान आर्य विचारधारा के विजयी हुए हैं, मेरे दो पौत्रों को रायबरेली में बहू रहकर पढ़वा रही है तथा मेरा पुत्र हरदोई में एक एन.जी.ओ.में कार्यरत है। मैंने पौत्रों का नाम आर्यमंगल तथा आर्य वीर रक्खा है। ग्रामीण क्षेत्रों के वैदिक पण्डितों द्वारा ही प्रचार व प्रसार संभव है। मेरे पड़ोस में इलाहाबाद बैंक शाखा स्थापित हो चुकी है, पत्रिका में आपके बचत खाता का उल्लेख है, क्या बचत खाते में खाताधारक, खाता संख्या मात्र से पैसा जमा हो जायगा, पहले जमा निकासी पासबुक के माध्यम से होता थी, इस प्रकार मुझे भी सुविधा होगी। पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों को मेरा अभिवादन।

-राजकुमार शास्त्री
प्रधान, आर्यसमाज, परारमनगरा, सीतापुर

(इलाहाबाद बैंक की किसी भी शाखा में पृ. सं. ८ पर लिखित विवरण मात्र से आप सहयोग राशि जमा कर सकते हैं।)

***

आर्य लोक वार्ता नवम्बर-दिसम्बर

संयुक्तांक में आर्यों के भोजन विषयक आलेख में जो वेदसम्मत विवेचन प्रस्तुत किया गया है, वह अत्यंत समीचीन एवं सेवनीय है। सम्पादकीय में हिन्दू-मुस्लिम समरसता के दृष्टांत दोनो मतावलम्बियों की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त है। 'जिज्ञासा और समाधान' में आपने वेदों में 'भगवान' के उद्धरण प्रस्तुत करते हुए मुझ जैसे जिज्ञासु के ज्ञान में भी अभिवृद्धि की है और यह अंश मेरे लिए संग्रहणीय बन गया है। 'वाचनालय से' में भाई अमृत खरे ने मासिक 'टंकारा समाचार' का जो गद्यखण्ड प्रस्तुत किया है, उससे सम्पूर्ण आलेख पढ़ने की आतुरता जाग्रत हुई हैं यदि सम्भव हो तो आपने सम्मानित पत्र में इसको स्थान दें। 'काव्यायन' में दीपावली पर 'यह दीप अकेला', 'दीपमालिका', 'दीपपर्व' प्रसंगिक रचनायें सराहनीय हैं। डॉ.कैलाश निगम की भावपूर्ण कविता ने भी प्रभावित किया। पत्र की अन्य विषय वस्तु वैदिक विचार धारा से ओतप्रोत और जीवन के लिए प्रेरणास्रोत है। आपकी अमृता बाधना को नमन। सत्य शिव सुन्दर कामनाओं सहित गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं!

राष्ट्रीय गणतंत्र अमर हो, ध्वज तिरंग लहराए।
वाह्यान्तर से संप्रभुता को आंच न आने पाए।
असमानता, अनय, अशिक्षा, असहिष्णुता मिट जाए।
संविधान पूर भारत में राष्ट्र-एकता लाए।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ -२२

***

आर्य लोक वार्ता का नवम्बर दिसम्बर

अंक प्राप्त हुआ और सभी विद्वानों के विचारों से प्रभावित हुई। प्रथम पृष्ठ पर पं.रघुनन्दन शर्मा का लेख आर्यों के सात्विक आहार पर प्रकाश डालता है जो मानव प्रकृति के हिसाब से फिट है। 'वेद प्रवचन' में पं. शिवकुमार शास्त्री जी मंत्र व्याख्या बहुत ही मनभावन है। आनन्द कुमार जी का 'मनुष्य का विराट रूप' धारावाहिक बहुत ही मनोवैज्ञानिक है। उन्होंने यह बताया है कि ज्ञान के विकास से भय का नाश होता है। अज्ञानी ही भयभीत होते हैं जब ज्ञान बढ़ जाता है उतनी कुशलता आ जाती है। आनन्द गिरि की व्याख्यान माला 'अनन्त की खोज' वैदिक सत्यता पर आधारित है। वेदमाता हमें परमात्मा से परिचय करवाती है। 'काव्यायन' में सभी कविताएं उत्तम हैं। ओम प्रकाश आर्य (राजस्थान) के वैदिक दोहे बहुत ही मनोहारी हैं। सूफी फकीर रहीमबख्श का 'दयानन्द था इस जमाने का रहनुमा' बहुत अच्छा लगा।

-प्रमोद कुमारी
एम.एस.-३७, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

धारावाहिक-(59)

मनुष्य का विराट् रूप

–आनन्दकुमार–

ज्ञान के अनेक भेद हैं। सबके विषय में यहाँ कुछ लिखना संभव नहीं है। इतना ही कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति को आत्म-ज्ञान, व्यावसायिक ज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान अवश्य ही प्राप्त करना चाहिए।

यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक गुण सदुपयोग से सार्थक होता है। ज्ञान का सदुपयोग प्रचीन ऋषियों के मत से यह है-

तस्मादात्मसुखं प्रेप्सुरिष्टानिष्टं न चिन्तयेत्।
चिन्तयेच्चेत्तदा चिन्त्यो मोक्षोपायो न चेतरः।।

-स्कन्दपुराण

अर्थात्- '...आत्म-सुख की इच्छा रखने वाला पुरुष किसी का अनिष्ट चिन्तन न करे। यदि कुछ सोचना ही है तो मुक्ति के उपाय का चिन्तन करे और किसी का बात नहीं।' यही ज्ञान का प्रयोजन है। ज्ञान की सहायता से मनुष्य को चैतन्य, प्रत्युत्पन्नमति, युक्तिज्ञ, मर्मज्ञ, सूक्ष्मदर्शी, विवेकी एवं व्यवहारचतुर और कार्यदक्ष होना चहिए। ज्ञानी होने के ये लक्षण हैं।

(ङ) स्वार्थ-त्याग : -भय का एक प्रधान कारण है, मनुष्य का स्वार्थ। किसी पाश्चात्य पंडित ने कहा है कि प्रत्येक भय के मूल में मनुष्य की स्वार्थपरायणता रहती है।--*'At the bottom of all fears lies selfishness.'* ध्यान से देखिए तो स्वार्थजन्य भावनाओं के कारण मनुष्य का जीवन सचमुच आशंकामय हो जाता है। शरीर, सम्पत्ति और सुख भोग में अत्यधिक आसक्ति उनके नाश की शंका उत्पन्न करती है। उनकी रक्षा के लिए मनुष्य को प्रत्येक खण चिन्तित और दूसरों से भयभीत रहना पड़ता है। धन के मोह के कारण ही तो व्यवसायी लोग सरकारी अधिकारियों से डरते हैं। उन्हें भय रहता है कि कहीं अफसर लोग नाराज होकर उनके स्वार्थ पर आघात न कर दें। स्वार्थ-सिद्धि के लिए ही लोग पतित प्रभुओं की हाँ-हुजूरी करते हैं। स्वार्थवश ही धनिक लोग चोरों से डरते हैं। कोई त्यागी या निष्काम कर्म करने वाला किसी से नहीं डरता क्योंकि न तो उसको अपना मोह होता है और न किसी पराई वस्तु का। त्यागी हमेशा फक्कड़ और निर्भय होता है। उसके मन में पद-प्रभुत्व, धन-वैभव की तृष्णा नहीं होती, इसलिए उसे किसी वस्तु के होने न होने का हर्ष-शोक नहीं होता। वह किसी की प्रसन्नता-अप्रसन्नता की परवाह भी नहीं करता। मौर्य साम्राज्य का संस्थापक और महामंत्री चाणक्य ऐसा ही त्यागी और तृष्णा-रहित व्यक्ति था। उसे न पद का लोभ था, न प्रभुता का और न राज-सम्पत्ति का। इसलिए वह निर्भय होकर अपना कर्त्तव्य करता था। चन्द्रगुप्त को एक बार इस पर आश्चर्य और क्षोभ भी हुआ कि चाणक्य उसका सत्कार क्यों नहीं करता। उसने रहस्य का पता लगाया। रहस्य यह था-'निरीहा-णामीशस्तृणमिव तिरस्कारविषयः'-मुद्रा राक्षस। जिसके मन में कोई लालसा नहीं है, वह बड़े आदमी का मुँह क्यों ताकेगा? उसकी दृष्टि में तो वह तृणवत् तुच्छ-तिरस्कार के योग्य होता है। जिनका कोई स्वार्थ रहता है, वही ऐश्वर्यशाली पुरुषों से दबते हैं और उनकी हाँ में हाँ मिलाते हैं।

स्वार्थ में संग्रह की भावना होती है। संग्रह सदा भय का कारण होता है। फलों से लदे हुए वृक्ष को लोग ढेला मारते ही हैं। जो वस्तु सबके काम की है, उसे पेड़ अपने पास बटोर कर नहीं रख सकता। इसी प्रकार जो लोग अनावश्यक भोग-साधनों का संग्रह अपने लिए करते हैं या करना चाहते हैं, लोग उनके विरुद्ध हो जाता है। उन्हें लोक से भयभीत रहना पड़ता है। जो लोग अपना सर्वस्व भगवान् का या जनता का समझते हैं, उन्हें किसी से भय क्यों रहेगा? त्याग का यही महत्त्व है। निरासक्त होकर ही मनुष्य सच्चे भव-वैभव का उपभोग कर सकता है। गाँधीजी ने ठीक ही कहा है कि देह-सम्बन्धी राग-आसक्ति दूर हो तो अभय सहज ही में प्राप्त हो सकता है....स्वामी न बनकर सेवक रहें तो सहज ही समस्त भयों को जीत लें।

(च) धर्म (सदाचार) : -यह एक अनेक युगों का अनुभूत सत्य है कि कर्त्तव्यनिष्ठ धर्मात्मा मृत्यु से नहीं डरते-'मरणान्न विभेति धार्मिकः।' भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है कि थोड़ा-सा भी धर्म महान् भय से रक्षा करता है-'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।' इसके लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। धर्मानुकूल आचरण से मनुष्य का आध्यात्मिक बल और तेज बढ़ता है। उनकी वृद्धि से तामसिक भावों का विनाश स्वाभाविक है। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी सदाचार या कर्त्तव्य का पालन करते समय मनुष्य का हृदय भयभीत या निराश नहीं होता। सच्चा साहस नैतिकता से पैदा होता है। सत्य और न्याय पर दृढ़ रहने से शत्रु क्या मृत्यु से भी डर नहीं लगता; लोग हँसते-हँसते बलिदान हो जाते हैं। उन्हें यह विश्वास रहता है कि उससे उनकी आत्म-पराजय अथवा दुर्गति नहीं होगी। सचमुच उनकी विजय ओर सद्गति ही होती है। झूठे और धूर्त तथा अत्याचारी को क्षणिक सफलता भले ही मिल जाय, परन्तु उससे उनका आत्मपतन हो जाता है। उनके अपराध उनकी आत्मा को भीतर ही भीतर यम-दूत की तरह संत्रस्त करते रहते हैं। उनका नैतिक बल क्षीण हो जाता है। सदाचारी तो जीवन में एक ही बार मरता है, लेकिन दुराचारी एक दिन में ही कई बार मरता है। पुण्य का नाम लेकर पाप करने वालों का कंठ तो क्षण-क्षण पर अवरुद्ध होता रहता है।

सदाचार से अनेक प्रकार के भय नष्ट होते हैं-जैसे, लोक-निन्दा का भय, अप्रतिष्ठा का भय, स्वास्थ्य-नाश का भय, विरोधियों का भय और दण्ड का भय, आदि। कौटिल्य ने कहा है कि अपयश सारे भयों से बढ़कर है-'अपयशो भयं भयेषु।' इस भय का निवारण सदाचार से ही होता है। लोक में सच्चरित्र की सदा प्रतिष्ठा होती है, चाहे वह निर्धन और अकुलीन ही क्यों न हो। उसे अपमान की शंका नहीं होती। सदाचार से स्वास्थ्य की रक्षा होती है, इसे कौन नहीं मानेगा? उसके आगे विरोधियों का अनाचार, आदि में न सही अन्त में अवश्य ही निष्फल हो जाता है। सदाचार पालन में दण्ड का भय भी नहीं रहता क्योंकि दण्ड, चाहे वह ईश्वरीय हो या लौकिक, दुराचार के लिए ही मिलता है।

संसार में धर्म मनुष्य का परम सहायक और रक्षक है। तत्त्वज्ञ ऋषियों ने तो यहाँ तक कहा है कि वह परलोक में भी मनुष्य का साथ देता है।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

(पृष्ठ ३ का शेष......)

भारत जागरण.....

चुके हैं, आज की नवीनता से भी नवीन हैं। क्योंकि सत्य यह है जो जितना ही पीछे है, उतना ही आगे भी, जो सबसे पहले दृष्टि के सामने है वही सबसे ज्यादा नवीन है।

ज्ञान की ही हद में सृष्टि की सारी बातें हैं। सृष्टि की अव्यक्त अवस्था का भी ज्ञान है। स्वामी जी वेदाध्ययन में अधिकारी भेद नहीं रखते। वह सभी जातियों की बालिकाओं-विद्यार्थिनियों को वेदाध्ययन का अधिकार देते हैं। यहां यह स्पष्ट है कि ज्ञानमय कोष चाहे वह जड़-विज्ञान से सम्बन्ध रखता हो, धर्म-विज्ञान से- नारियों के लिए युक्त है, वे सब प्रकार से आत्मोन्नति करने की अधिकारिणी हैं। इस विषय पर आप 'सत्यार्थ प्रकाश' में एक मंत्र उद्धृत करते हैं-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।

(यजु.२६/२)

'परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिए (इमाम्) इस (कल्याणीयम्) कल्याण अर्थात संसार और मुक्ति के सुख देने हारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी (आवदानि) उपदेश करता हूँ, वैसे तुम भी किया करो।' यहां कोई ऐसा प्रश्न करे कि जन-शब्द से द्विजों का ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ही को वेदों के पढ़ने का अधिकार लिखा है, स्त्री और शूद्रादि वर्णों को नहीं। (उत्तर) ब्रह्मराजन्याभ्याम् इत्यादि देखो, परमेश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय (आर्याय) वैश्य, (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अति शूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है, अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन सुनाकर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों को ग्रहण और बुरी बातों को त्याग करके दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हों। कहिए, अब तुम्हारी बात माने वा परमेश्वर की? परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो कोई इसको ने मानेगा, वह नास्तिक कहावेगा, क्योंकि 'नास्तिको वेद निन्दकः' वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है।

स्वामी जी ने वेद के उद्धरणों द्वारा सिद्ध किया है कि स्त्रियों की शिक्षा, अध्ययन आदि वेद-विहित है। उनके लिए ब्रह्मचर्य के पालन का भी विधान है। स्वामी जी की इस महत्ता को देखकर मालूम हो जाता है कि स्त्री समाज को उठाने वाले पश्चिमी शिक्षा-प्राप्त पुरुषों से वह वहुत आगे बढ़े हुए हैं। वह संसार और मुक्ति दोनों प्रसंगों में पुरुषों के ही बराबर नारियों को अधिकार देते हैं। इस एक ही वाक्य से साबित होता है कि किसी भी दृष्टि से वह नारी जाति को पुरुष जाति से घटकर नहीं मानते।

आपका ही प्रवर्त्तन आर्यावर्त के अधिकांश भागों में महिलाओं के अध्यापन के सम्बन्ध में प्रचलित है। यहां स्त्री शिक्षा विस्तार का अधिकांश श्रेय आर्य समाज को दिया जा सकता है। यहां की शिक्षा की एक विशेषता भी है। महिलाएं यहां जितने अंशों में देशी सभ्यता की ज्योति-स्वरूपा होकर निकलती हैं, उतने अंशों में दूसरी जगह नहीं। संस्कृति को ही स्वामी जी ने सामने खड़ा कर दिया है। (१९३२ई.)

(महाकवि द्वारा 1932 ई. में लिखित बृहद् लेख का संपादित अंश, शताब्दी स्मृति ग्रंथ आर्यसमाज डालीगंज, लखनऊ से साभार)

व्याख्यान माला (16)

अनन्त की खोज

–महात्मा आनन्द गिरि–

अकस्मात् मुझे गुरु महाराज के चरणों में उपस्थित होने का सुयोग मिला। श्रोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ गुरु महाराज ज्ञानसिद्ध महापुरुष हैं वेदान्त योग की चैतन्य मूर्ति। एक दिन मैंने अपनी शंका निवेदित की- 'महाराज, वेद को माता कहने में क्या प्रयोजन है?' महाराज श्री ने मेरी ओर दृष्टिपात किया। वात्सल्यपूरित दिव्य स्नेहदान से मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा। महाराज श्री के समझाने की शैली प्रश्नोत्तर ढंग की है। उन्होंने मुझसे प्रश्न किया-'बता रे तुझे संसार का प्रथम बोध किसने कराया?' मैंने एक क्षण में निर्णय कर लिया कि मैं नहीं कहूँगा कि माता ने कराया। ऐसा कह दिया तो सारी बात यहीं समाप्त हो जाएगी। महाराज कह देंगे कि वेद इसीलिए माता है। अस्तु मैंने बड़ी चालाकी से उत्तर दिया- ''भगवन्, पिता ने मुझे जगत का प्रथम बोध कराया। जब मैं उनकी गोद में बाहर जाता था, वह मुझे इधर-उधर ले जाते थे। तब रास्ते में दिखने वाली प्रत्येक वस्तु के बारे में मैं पूछता था और वह बताते थे।''

महाराज श्री ने मेरी चालाकी ताड़ ली 'दुष्ट' कहकर हँस पड़े। 'अरे तेरी माता ने भी कुछ सिखलाया है कि नहीं?' उन्होंने पूछा। 'महाराज मेरी माता तो निरक्षरा साधारण महिला हैं। वह मुझे क्या सिखलाती?' मैंने निवेदन किया। 'महाराज जो कुछ सांसारिक बोध मुझे मिला, पिता से मिला और बड़े होने पर मित्रों अध्यापकों से मिला। फिर संसार का अनुभव भी तो पाठशाला है जिसमें नित्य पढ़ने का अवसर मिलता है। सो महाराज।' मैंने विनम्रता से कहा-'माता का दिया कोई बोध मेरे पास नहीं है।'

महाराज ने एक क्षण के लिए मेरी ओर देखा। फिर पूछा-'अच्छी प्रकार से विचार करके बोलो। बाद में न कहना कि मुझे याद नहीं रहा।'

मैंने अर्ज किया कि-'नहीं महाराज जी मैंने सोच समझ कर बिलकुल निश्चित कहा है।'

महाराज श्री के धूनी के चारों ओर और भी कई भक्त जिज्ञासु बैठे थे। पंडित फड़के वेद के प्रसिद्ध विद्वान् भी श्री चरणों में उपस्थित थे। महाराज ने कहा-'बेटा, एक बोध ऐसा गम्भीर और परम है जो न कोई वेदज्ञ ही उसे बता सकता था और न तेरा पिता।'

कुछ क्षण के लिये सारा वातावरण स्तब्ध हो गया। मुझे मेरे हृदय की धड़कन भी सुनाई पड़ रही थी। औत्सुक्य चरम तनाव बिन्दु पर था।

'महाराज' मैंने सहमते हुए कहा-'मेरी स्मृति में ऐसा कोई रहस्य नहीं है जो मेरी माँ ने मेरे समक्ष खोला हो।'

महाराज श्री मुस्कुराये। स्नेह से उन्होंने कहा-'तेरे पिता कौन हैं? यह रहस्य तुझे किसने बताया? बोल, इस सत्य को कौन बताता है कि 'जनक' कौन है? इस रहस्य को सिवाय माँ के और कौन जानता है?'

इस उत्तर ने सारी शंकाओं का निवारण कर दिया। वेद शब्द के अर्थ को नया आयाम प्रदान किया। वेद इसलिये माता है चूँकि वह हमारे पिता का, जगत पिता का बोध कराती है। ऐ मित्र दोस्ते वास्की ईश्वर का श्रेयस्कर विचार मानव मस्तिष्क में नहीं जन्मा था। भगवति वेद माता ने यह सत्य मनुष्य के आगे खोला था। अस्तु वेद का प्रतिपाद्य जहाँ विश्व ब्रह्माण्ड की जानकारी देता है तो दूसरी ओर अस्तित्व के परम कारण को भी प्रकट करता है। अगर आप अपने पिता को सृष्टि के पिता को जानना चाहते हो तो भगवति श्रुति को सुनो। याद रखना माता इस सम्बन्ध में जो कुछ भी कहेगी वह तर्क और साक्षी से परे की बात होगी। तुम्हें इसकी आज्ञा न स्वीकार करने का कोई अधिकार नहीं है। यह जो कुछ भी कहेगी परम सत्य होगा, परम प्रमाण होगा। अतः वेद स्वतः प्रमाण है, निर्विवाद है और परम सत्य है। सच तो यह है कि इसके अतिरिक्त कोई और मार्ग भी नहीं है। इसको नहीं मानोगे तो मैं पूछता हूँ क्या मानोगे? माता को न मानकर तुम किस-किस से पूछते फिरोगे अपने पिता के बारे में? एतदर्थ ऋषि दयानन्द ने मनुष्यकृत ग्रन्थों को वह स्थान नहीं प्रदान किया जो वेद को स्वभाव से प्राप्त है।

आप सोच रहे होगे कि भगवति श्रुति का आविर्भाव कैसे हुआ होगा? मैं निवेदन करूँगा कि इसका आभिर्भाव कैसे नहीं हुआ यह जानना अधिक महत्व पूर्ण है। मानव ज्ञान के विकास में तीन कारण महत्त्वपूर्ण हैं। इस तीन कारणों ने आर्षवाङ्मय के तीन महत्वपूर्ण ग्रन्थों को जन्म दिया।

कुरुक्षेत्र में कौरव पाण्डव की सेना एक दूसरे के सम्मुख खड़ी थीं। शस्त्र सम्पात का समय समीप था। पाण्डव पक्ष का महारथी अर्जुन जो महाकाव्य का नायक है जिसके चारों ओर महाभारत की घटनाएँ घूमती हैं, युद्धक्षेत्र में प्रवेश करता है। स्वजनों को परस्पर एक दूसरे की हिंसा के लिए तत्पर देखकर वह सहम गया। कर्म को अवश्यम्भावी परिणति घोर हिंसा में देखकर उसका मानस काँप गया। युद्धोत्साह, शौर्य, वीर्य सब कुछ नष्ट हो गया। हतप्रभ अर्जुन अन्दर से टूट गया- 'न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह।' मैं युद्ध नहीं करूंगा- ऐसा स्पष्ट कहकर अर्जुन चुप हो गया। उसके मित्र, उसके सखा सारथी कृष्ण को जो योगैश्वर्य के परम सिद्ध थे, उसे उपदेश करना पड़ा। यह उपदेश गीता के नाम से प्रसिद्ध है। गीता का जन्म घटनाओं की अपरिहार्यता में आयी हुई एक आकस्मिता है। परिस्थिति यदि ऐसा मोड़ न लेती तो गीता का जन्म न होता। मित्रों, वेद का आविर्भाव इस प्रकार की घटना नहीं है।

ज्ञान के आविर्भाव का दूसरा कारण मानव प्रयत्न है। उपनिषद् का अध्ययन बताता है कि जिज्ञासुगण शंका समाधान के लिए अथवा सत्य को समझने के लिए ऋषियों के पास जाया करते थे। सांसारिक कोलाहल से दूर, समस्त एषणाओं से परम मुक्त ऋषिगण वस्तुतः सत्य की प्रयोगशाला थे। उनकी बौद्धिक चेतना सतत् सत्यान्वेषण में रहती थी।

(क्रमशः)

काव्यायन

विवेकानन्द–जयन्ती पर

स्वामी विवेकानन्द

❑रामकुमार गुप्त

राष्ट्रभक्ति का आपने दिया अमर संदेश।
फहराया वेदान्त ध्वज जाकर देश विदेश।।
भारतीय दर्शन सभी, संस्कृतियों का सार।
परमेश्वर है पुरुष में, जग में किया प्रचार।।
सुनकर शोषित, क्षुधित की, दीन हीन की आह।
उठे विवेकानन्द थे, व्याकुल व्यग्र कराह।।
मन्दिर मस्जिद में नहीं, केवल प्रभु का वास।
प्रेम भक्ति जिसके हृदय, ईश्वर उसके पास।।

–निकट मंगलादेवी मंदिर, गोला गोकर्णनाथ, खीरी–262802

तीन नसीहतें

❑डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक'

बुलबुल पकड़े हुए जाल में, बैठा एक शिकारी।
व्याकुल बुलबुल मधुर कण्ठ से भरकर आह पुकारी।।
नहीं पेट तेरा भर पाए मेरे मांस को खाकर।
मुझे छोड़ दे तो तुझको दूँ तीन नसीहत सुन्दर।।
बात शिकारी ने मानी, उसको छोड़ा अगले पल।
धन्यवाद देकर उसको, बोली आनन्दित बुलबुल।।

काम असम्भव कभी न करना, नष्ट हुए का पश्चाताप।
कभी नहीं विश्वास करें अविश्वसनीय वस्तु का आप।।
बना मूर्ख तू मुझे छोड़कर, अब क्या तेरे कर में?
शुतुरमुर्ग के अण्डे जितना हीरा मेरे उदर में।।
चिन्तित हुआ शिकारी उसके मन में फिर से आस ठनी।
लगा पकड़ने जाल बिछा, कर पूरी कोशिश अपनी।।

थका शिकारी, मिली न बुलबुल, उसको हुई निराशा।
हँसकर बोली बुलबुल रानी– अच्छा रहा तमाशा।।
काम असम्भव है यह जो तू मुझको पुनः पकड़ता।
नष्ट हुआ है जो तेरा श्रम, क्यों उसको दुःख करता?
हीरे का विश्वास तुझे जो हुआ हुई मैं विस्मित।
शुतुरमुर्ग के अण्डे जितना उदर न मेरा विस्तृत।।

–6105, पतजलि योगपीठ फेज–2, हरिद्वार–249405

दूषित हुआ वायुमण्डल

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

दूषित हुआ वायुमण्डल है, सूक्ष्म कणों के मिश्रण से।
स्वास्थ्य क्षीण करने की क्षमता, ग्रस्त हो रही प्रति कण से।।

धूम्र छोड़ते वाहन दौड़ें, जहर हवा में घोल रहे।
ध्वनि विस्तारक यंत्र पथों पर, कनफोड़ू स्वर बोल रहे।।

भूजल है पाताल जा रहा, सूख रहीं कितनी नदियाँ।
जिन्हें सींचते कृषि-उपवन को, बीत गयीं अगणित सदियाँ।।

नित्य प्रकृति के दोहन शोषण मे हम हाय! निरत रहते।
वृक्ष काटकर, ताल पाटकर, दुख-ज्वाला में ही दहते।।

करो नहीं बर्बाद नीर को, सब जल का संचयन करो।
पेड़ लगाओ ताल बचाओ, अब 'अबोध' दुख-दैन्य हरो।।

–370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

गणतंत्र-दिवस

❑सविता 'वाणी'

शुभ गणतंत्र दिवस आया है, सुदिन नए उत्सव लाया है।
संविधान की करे प्रतिष्ठा, भारत के प्रति हो सद्निष्ठा।
ध्वज तिरंगा लहराया है।
सच हों नम आंखों के सपने, पूरे सभी लक्ष्य हों अपने।
जन-गण-मन का स्वर भाया है।
सदा बहे स्नेहिल श्रम-गंगा, कोई न रहे भूखा नंगा।
प्रगति पंथ को अपनाया है।
शुभ गणतंत्र-दिवस आया है।।

–गौरीगंज, जनपद–अमेठी (उ.प्र.)

आ गया नववर्ष!

❑आभा मिश्रा

आ गया नव वर्ष! आ गया नव वर्ष!

दीप आलोकित हुए हैं आस के।
पंख अब खुलने लगे परिहास के।।
अधर सुमनों से खिले हैं-
ताल-लय स्वर आ मिले हैं।।
दिग-दिगन्त में भरा है हर्ष!

सरसी में उत्पल, अनत में भानु आलोकित
विहग नवसंदेश देते, विहरते पुलकित।।
खेत में सरसों है फूली, विहँसते उद्यान।
प्रीति की नव प्रेरणा ले, उदित है दिनमान।।
कल्पना करने चली है चाँद का स्पर्श!

आओ सब मिल बैठ गायें एकता के गीत।
तोड़ दे इन भेदभावों की रेतीली भीत।।
चलो नभ से स्वर्ग वसुधा पर उठा लायें।
मेट दें घनघोर तम, वह दीप बन जायें।।
सदा मंगलकामना मय हो विचार विमर्श।!

–368/40, लकडमण्डी, सआदतगंज लखनऊ

वैदिक दोहे

❑ओम प्रकाश आर्य

ओम नाम ही मुख्य है, जो है जगदाधार।
जाप करो तुम हृदय से, होगे जग से पार।।

जग में ईश्वर एक है, सिर्फ अनेकों नाम।
कर उपासना प्रेम से, मिले मोक्ष सुखधाम।।

वैदिक ग्रन्थों का करो, प्रतिदिन तुम स्वाध्याय।
भूख आत्मा की मिटे, होवे ईश सहाय।।

तर्कशक्ति है मेटता, धरती का अज्ञान।
पढ़ सत्यार्थ प्रकाश को, पाओ तर्क महान।।

जाति-पांति सबसे बुरा, इसे धरती का रोग।
करो नष्ट मिलकर इसे, जीवन में सु-प्रयोग।।

–आर्य समाज, रावतभाटा, कोटा (राजस्थान)

हर्ष–चतुष्पदी

कौन जाने?

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

गर्म पानी बह रहा, कब तक बहेगा?
मर्म गाथा कह रहा, कब तक कहेगा?
है सभी का हाल ऐसा मगर अब भी-
सर्द झोंके सह रहा, कब तक सहेगा?

बहुत पीछे किन्तु बहुतों से बहुत आगे,
जीत पायेगा वही जो नींद त्यागे।
'हर्ष' भी कम नहीं है कहीं आगे कहीं पीछे
कौन है दानी जगत में जो किसी से नहीं मांगे?

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी गीत

कवितापाठ किया!

❑अमृत खरे

हाँ, फिर मैंने अपनी रौ में कवितापाठ किया,
भीतर-बाहर मधुमय, मुदमय, रसमय ठाठ जिया!

बचपन में घूमा, यौवन के अनगढ़ रंग गढ़े,
अतल सिंधु को नापा, फिर ऊँचे आकाश चढ़े,
संयम का दर्पण तोड़ा, छवि को आजाद किया!

कुसुम-शरों को साधा, काँधे पर तूणीर कसा,
दिग्-दिगंत रौंदा, कर आया अश्वमेध सहसा,
जीता नहीं जिसे, धरती का ऐसा कौन ठिया!

कालिख पुते हुए अम्बर पर सूरज एक धरा,
अंध-बंध को काटा, किरणों में उल्लास भरा,
टांग दिया बोदे-बदरा पर इन्द्रधनुष बढ़िया!

हाँ, फिर मैंने अपनी रौ में कवितापाठ किया,
भीतर-बाहर मधुमय, मुदमय, रसमय ठाठ जिया!

–2/90, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–10

विवेकानन्द–जयन्ती पर

स्वामी विवेकानन्द

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

दिया विवेकानन्द ने, मानवता संदेश।
उच्च लक्ष्य-पथ पर बढ़े, व्यक्ति समाज स्वदेश।

कर्मशील बनकर जियो, स्वामी जी की सीख।
सक्षम, सबल, सुयोग्य क्यों, मांगे घर-घर भीख।।

शाश्वत भारत देश का, दिव्य सनातन धर्म।
पूज्य विवेकानन्द ने, दिया जगत को मर्म।।

रामकृष्ण गुरुकृपा से, मिला अलौकिक ज्ञान।
स्वामीजी ने विश्व में, किया वेद-गुणगान।।

विश्व धर्म हैं उपनिषद, ईश-वचन हैं वेद।
परमपिता की दृष्टि में, लेश नहीं मतभेद।।

पुण्यभूमि भारत धरा, भारत मम सर्वस्व।
आर्ष वेद-विज्ञान का, हो जग में वर्चस्व।।

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ–226 022

दिव्य दोहे

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

गीता का उपदेश है, करो काम निष्काम।
फल की चिंता मत करो, भला करेंगे श्याम।।

गीता मानस बाँचकर, लोग हुए द्युतिमान।
मानव का करते रहे, जीवन भर उत्थान।।

पाप-ताप-संताप का, हो जाता है अन्त।
गीता से जुड़कर मनुज, बन जाता है सन्त।।

मानस गीता वेद सब, सत् शिव सुन्दर ग्रन्थ।
दर्शाते हैं ये सतत, सत् शिव सुन्दर पन्थ।।

ग्रन्थ कई बहुमूल्य हैं, गीता कोहेनूर।
जुड़कर जिससे हो गए, अगणित जन मशहूर।।

हर नारी राधा बने, हर नर कृष्ण समान।
तब होगा इस देश के, जन-जन का कल्याण।।

गुरु हों द्रोणाचार्य सम, पाण्डव जैसे छात्र।
तभी बनेगा देश मम, राम-राज्य का पात्र।।

आओ! गीता से जुड़ें, करें तिमिर सब दूर।
बिखरा दें चहुँओर ही, गीता का शुचि नूर।।

यत्र तत्र अर्जुन खड़े, दुविधा में, राधेश!
आकर इनको दीजिए, गीता के उपदेश।।

आओ! 'नासिर' बाँट दें, दुखियों में सब प्यार।
नवल नवल दे दें उन्हें, खुशियों के उपहार।।

–जी–02, लोरपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

राजस्थान-समाचार

अर्जुनदेव चड्ढा 'समाज रत्न' से अलंकृत

कोटा, २८ दिसम्बर। समाज सेवा में अग्रणी रहने वाले कोटा आर्य समाज के

जिला प्रधान और ख्यातनाम समाजसेवी श्री अर्जुनदेव चड्ढा को प्रेसक्लब जयपुर में आयोजित एक भव्य समारोह में कर्मठता के लिए 'समाज रत्न' पुरस्कार से अलंकृत किया गया। उन्हें सामाजिक जन जागरण के लिए विशेष कार्य करने के लिए सम्मानित किया गया। उनके नाम की घोषणा कार्यक्रम संयोजक व राजस्थान जन मंच के महासचिव कमल लोचन ने की। श्री चड्ढा को आर.के. अग्रवाल ने साफा पहनाकर, मुख्य अतिथि एस.डी.शर्मा ने सत् साहित्य प्रदान कर, कमल लोचन ने सम्मान पत्र प्रदान कर व श्याम विजय ने श्रीफल प्रदान कर, समारोह अध्यक्ष दिनेश चन्द गुप्ता ने बैच लगाकर तथा संचेतना मिशन पीठ के प्रज्ञानन्द महाराज ने स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। *(अरविन्द पाण्डेय)*

आर्य समाज ने अग्नि पीड़ितों को वस्त्र बांटे

कोटा, १४ नवम्बर। भीषण आग से तबाह मराठा बस्ती में मदद को आर्य समाज

आगे आया। बस्ती में लाकर लोगों की मदद की। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस के अवसर पर अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज जिला सभा कोटा के द्वारा अग्निकाण्ड से तबाह मराठा बस्ती साजीदेहड़ा में जाकर ऊनी वस्त्र वितरित किये। आर्य समाज जिला सभा द्वारा स्थानीय पार्षद मोहम्मद हुसैन के साथ उक्त सामग्री प्रदान की गई। इस अवसर पर आर्य समाज रामपुरा के प्रधान कैलाश वाहेती, विज्ञाननगर के प्रधान जे.एस. दुबे, तलवंडी के प्रधान श्रीचंद गुप्ता एवं आर्यसमाज गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय उपस्थित थे।

हरदोई-समाचार

वैदिक यज्ञ

१५.१२.१५। कछोना (बालामऊ) में लम्बे असें बाद वैदिक यज्ञ का आयोजन श्री राम प्रकाश द्विवेदी के आवास पर सम्पन्न हुआ। यज्ञ में श्री रामप्रकाश द्विवेदी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ऊर्मिला द्विवेदी कु.प्रिया द्विवेदी सहित परिवार के समस्त सदस्यों ने भाग लिया तथा यजमान का आसन श्री अभिषेक द्विवेदी (सचिन) एवं श्रीमती सपना द्विवेदी ने सुशोभित किया। यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता लखनऊ ने सम्पन्न कराया तथा विशेष अतिथियों के रूप में श्रीमती सरला त्रिपाठी, अमित वीर एवं रश्मि त्रिपाठी लखनऊ, श्रीमती सुषमा मिश्र, बहर, हरदोई तथा श्रीमती सौम्या ने उपस्थित होकर यजमान दम्पति को पुष्पवर्षा करते हुए शुभ आशीर्वाद प्रदान किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना की। यज्ञ के आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने यजमान दम्पति को उपदेश देते हुए कहा- माता पिता की सेवा सुश्रूषा ईश्वर पूजा के बराबर है। अतः इससे कभी भी विरत नहीं होना चाहिए। यजमान परिवार द्वारा अभ्यागतों एवं उपस्थित जनों का समुचित स्वागत-सत्कार किया गया।

फैजाबाद-समाचार

'हर्ष' को हर्ष

फैजाबाद के वरिष्ठ कवि, लेखक एवं समाजसेवी श्री बाँके बिहारी 'हर्ष' के भतीजे श्री वांछित रस्तोगी एवं श्रीमती अनुश्री रस्तोगी को दिनांक १५ दिसम्बर २०१५, मंगलवार को पुत्र की प्राप्ति से हर्ष-परिवार में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने नवजात शिशु के मंगलमय भविष्य के प्रति शुभ कामना प्रकट की तथा वांछित एवं अनुश्री को यह संदेश दिया कि वैदिक शास्त्रों के अनुरूप बालक का नामकरण संस्कार अवश्य होना चाहिए।

नजीबाबाद-समाचार

गुरुकुल नजीबाबाद का दीक्षान्त समारोह

दि.३०, ३१ अक्टूबर एवं १ नवम्बर २०१५ को कन्या गुरुकुल नजीबाबाद का द्वितीय दीक्षान्त समारोह उल्लास पूर्वक सम्पन्न हो गया। गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति आचार्य वेद प्रकाश, डॉ.भारतभूषण, वैदिक विद्वान् स्वामी वेदानन्द सरस्वती आदि महाशयों के कर कमलों द्वारा उपाधि वितरित की गई। आचार्य प्रियंवदा वेदभारती के दीक्षान्त सन्देश ने प्राचीन ऋषियों के युग की याद दिला दी। समारोह में गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने पं.चमूपति द्वारा गुरुवर विरजानन्द के प्रति लिखित श्रद्धांजलि गीतिका 'जय जय जय ऋषि प्रसव सुहागिन' मधुर संगीत में प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। ब्रह्मचारिणियों द्वारा प्रस्तुत संस्कृत नाटक 'शिवराजस्य शौर्यगाता:' एवं 'यक्ष युधिष्ठिर संवादः' भी आकर्षण का केन्द्र रहे। समारोह में प्रा.राजेन्द्र जिज्ञासु एवं पं.जयदत्त उप्रेती अल्मोड़ा की उपस्थिति ने चार चांद लगा दिए। *(रामचन्द्र आर्य)*

सीतापुर-समाचार

हिन्दी साहित्य परिषद

हिन्दी साहित्य परिषद सीतापुर के तत्वावधान में वरिष्ठ कवि श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव को उनकी काव्यकृति 'मधुमयी' के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में वैद्य भालेन्दु दत्त त्रिपाठी, कमलापति त्रिपाठी (प्राचार्य), आर.वी.यादव, नीलाम्बर सिंह ने 'मधुमयी' के साहित्यिक सौष्ठव पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में कवि गीतकार श्री रमेश जी ने 'मधुमयी' के कई गीत सुनाये तथा यह बताया कि पुस्तक उनकी प्रेममयी पत्नी 'मधु' की प्रेरणा का प्रतिफल है। संचालन श्री अवधेश गीतकार ने किया। *(अंजलि शुक्ला)*

लखनऊ-समाचार

पुस्तक मेला-2015 में पुस्तक परिचर्चा

'जड़, जमीन, जहान' पुस्तक का लोकार्पण

२३.१२.२०१५। प्रख्यात साहित्यकार व लेखक पं.हरिओम शर्मा 'हरि' द्वारा लिखित पुस्तक 'जड़, जमीन, जहान' का विमोचन व लोकार्पण मोती महल लॉन, लखनऊ में आयोजित पुस्तक मेले में किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य व संचालन प्रत्यूषरत्न पाण्डेय ने किया।

'लखनऊ तथा अन्य नगरों में भी बड़े पैमाने पर साहित्यिक कृतियों का प्रकाशन तथा विमोचन होता रहता है तथा सम्मान समारोह भी आयोजित होते रहते हैं किन्तु उनमें से कितनी पुस्तकें स्थायी साहित्य की कोटि में आती हैं, यह एक अलग प्रश्न है। पं.हरिओम शर्मा 'हरि' की लेखनी से निकलने वाला वाङ्मय निश्चय ही स्थायी साहित्य की कोटि में आता है क्योंकि लोकमंगल की पुनीत भावना पर आधारित है।' ये हैं वे शब्द जो हिन्दी जगत के प्रख्यात साहित्यकार, सम्पादक एवं लेखक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने पं.हरिओम शर्मा 'हरि' की लोकप्रिय पुस्तक 'जड़, जमीन, जहान' के नये संस्करण के प्रकाशन के संदर्भ में आयोजित 'पुस्तक परिचर्चा' की अध्यक्षता करते हुए कहे। आपने उ.प्र.एवं केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय से आग्रह किया कि रोचक शैली में लिखित इस पुस्तक को हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रमों में अनिवार्य रूप से स्थान दें।

डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने परिचर्चा में भाग लेने वाले वक्ताओं- वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती रमा आर्य 'रमा', टी.पी.हवेलिया, वीरेन्द्र सक्सेना, जे.पी.तिवारी, मनोज तोमर तथा सर्वेश अस्थाना के सुगठित एवं सुन्दर वक्तव्यों की सराहना की। आपने कहा ऐसे संतुलित वक्तव्य बहुत कम परिचर्चाओं में सुनने को मिलते हैं। समारोह के प्रारम्भ में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शिक्षाविद् सी.एम.एस.के संस्थापक श्री जगदीश गांधी के आगमन पर श्री शर्मा जी द्वारा भव्य स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

स्वामी श्रद्धानन्द जी का ८९वां बलिदान दिवस २३.१२.२०१५ को अपरान्ह २ बजे से ५ बजे तक श्रीमद्दयानन्द बाल सदन लखनऊ में आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आर्य समाज राजाजीपुरम द्वारा यज्ञ किया गया। आर्य समाज रकाबगंज की बहन राधा केसरवानी, उर्मिला जी, मीरा जी, सुमन जी तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री राधेमोहन जी के भजन, ब्रह्मचारी वीरेन्द्र जी, डा.रूपचन्द्र दीपक, नवनीत निगम एवं आचार्य विश्वव्रत के प्रवचन हुए। कार्यक्रम का संचालन प्रबोध सागर जौहरी, मंत्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर आचार्य वेदव्रत अवस्थी, पं.सन्तोष वेदालंकार तथा डा.भानु प्रकाश भी उपस्थित थे। प्रधान श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी के धन्यवाद प्रकाशन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। *(मंत्री, आर्यउपप्रतिनिधि सभा)*

'आचार्य कुलम्' योजना ने पकड़ी रफ्तार

गोपाल दास अग्रवाल ने किया भूमि का दान

दानवीर श्री गोपालदास अग्रवाल द्वारा लखनऊ-बाराबंकी के मध्य 10 एकड़ भूमि का दान करने से योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज के राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु बहुचर्चित एवं प्रशंसित योजना रफ्तार पकड़ती नजर आ रही है।

बीते दिनों 28.11.2015 का बाबा रामदेव के लखनऊ आगमन पर इस संबन्ध में औपचारिकताएँ पूरी कर ली गई हैं। इस योजना को कागज से धरती पर उतार कर अमली जामा पहनाने में पतंजलि योग समिति पूर्वी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री पीयूष कान्त की भूमिका प्रमुख रही है। *(आ.लो.वा.)*

महिलाओं हेतु योग शिक्षण प्राप्त करने का सुनहरा अवसर

पतंजलि योग समिति लखनऊ (पूर्व) की महिला प्रभारी श्रीमती मीना दीक्षित

के सूत्रों के अनुसार नारियों में योग और यज्ञ के संस्कारों को जागृत और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से १ से १४ फरवरी २०१६ तक सिटी मांटेसरी स्कूल, विशाल खण्ड-३, गोमती नगर के प्रेक्षागृह (पृष्ठभाग) में योग-यज्ञ प्रशिक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। यह प्रशिक्षण नित्यप्रति सायं ४.३० से ६.३० तक हुआ करेगा। इस सुनियोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में पूर्ण निष्ठा और मनोयोग से भाग लेने वाली सफल प्रतिभागियों को दीक्षान्त के अवसर पर प्रमाणपत्र भी दिये जायेंगे।

प्रशिक्षण में भाग लेने वाली महिलाओं को श्रीमती मीना दीक्षित १/३२, विपुल खण्ड, गोमती नगर, मो.नं. ९४१५११८१४१ से सम्पर्क स्थापित कर प्रशिक्षार्थियों में अपना स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिए।

भारतीय भाषा परिषद : भजन एवं काव्यसंध्या

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद, लखनऊ के तत्वावधान में २२.११.१५ को सिटी माण्टेसरी स्कूल, इन्दिरा नगर, लखनऊ के सभाकक्ष में प्रख्यात साहित्यकार श्री महेशचन्द्र द्विवेदी (पूर्व डी.जी.पी.) की अध्यक्षता में काव्य संध्या का सुरुचिपूर्ण आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन किया राजेश कुमार शर्मा 'आग्नेय' ने। इस अवसर पर श्री सुशील कुमार, वीरेन्द्र कुमार सक्सेना, हरिश्चन्द्र 'निशान्त', श्रीमती अर्चना प्रकाश, डॉ.मोहनलाल अग्रवाल, धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया 'प्रभंजन' एवं संचालक श्री आग्नेय ने अपनी ओजपूर्ण एवं ललित रचनाओं से संध्या को मधुरिम बना दिया।

आर्य समाज इन्दिरानगर का निर्वाचन

दि.०३.०१.१६, रविवार को आर्य समाज इन्दिरा नगर लखनऊ का वार्षिक निर्वाचन साप्ताहिक सत्संग की कार्यवाही समाप्त होने के पश्चात् श्री रामेन्द्रदेव वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये-

श्री डोरीलाल आर्य	प्रधान
श्रीमती कुसुम सिंह	उपप्रधान
श्रीमती सरिता श्रीवास्तव	उपप्रधान
श्री एस.के.निगम	मंत्री
श्रीमती कुसुम वर्मा	उप मंत्री
श्री अभयपाल सिंह	कोषाध्यक्ष
श्री रामगोविन्द ठाकुर	पुस्तकाध्यक्ष
श्री शिवप्रकाश गुप्त	अधि. आर्य वीर दल
श्री गंगाराम आर्य	निरीक्षक

अंतरंग सदस्य-प्रो.इन्द्रदेव गुप्त, श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी, श्री लक्ष्मण प्रसाद आर्य। प्रतिनिधि जिला सभा-श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी, रामेन्द्र देव वर्मा, प्रतिनिधि प्रान्तीय सभा-प्रो.इन्द्रदेव गुप्त, श्री रामगोविन्द ठाकुर। *(डोरीलाल आर्य, मंत्री)*

काव्य गोष्ठी

दि.२६.११.१५ को लोकमान्य विद्या मन्दिर, लकड़मण्डी, सआदतगंज, लखनऊ में माता सरस्वती के प्रांगण में महिला उत्थान समिति की अध्यक्षा श्रीमती आभा मिश्रा एवं हरिप्रसाद मिश्र के संयोजकत्व में एक काव्य गोष्ठी श्री रंग नाथ मिश्र की अध्यक्षता में हुई। इस गोष्ठी की मुख्य अतिथि कवयित्री विजयलक्ष्मी रस्तोगी एंव विशिष्ट अतिथि हास्यकवि सुभाष हुड़दंगी तथा वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती रमा आर्य 'रमा' रहीं। गोष्ठी का संचालन नगर के जाने माने छन्दकार महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश' ने किया।

दीपप्रज्ज्वलन के पश्चात आभा मिश्रा की वाणी वन्दना से गोष्ठी का आरम्भ हुआ। गोष्ठी में काव्यपाठ करने वालों में घनश्याम शुक्ल, हरि प्रसाद 'असीम', मुकेशानन्द, राजेन्द्र शुक्ल 'राज', अरविन्द रस्तोगी, महेश पाण्डेय 'महेश', मीरा चौरसिया, रंजना चौहान, विजय लक्ष्मी रस्तोगी, क्षमापूर्णा पाठक के नाम उल्लेखनीय हैं। गोष्ठी का समापन अध्यक्षीय उद्‌बोधन, श्री हरिप्रसाद 'असीम' के आभार प्रदर्शन एवं सूक्ष्म जलपान के साथ हुआ। *(आभा मिश्रा)*

सन् 2016 के आर्य पर्व - आर्य लोक वार्ता का स्नेहोपहार

लोक प्रचलित नववर्ष-२०१६-स्वागतम्

होता(ऋत्विक्) सदस्यों को विशेष धन्यवाद-बधाई-आभार प्रदर्शन

सन् सोलह दे आपको- सुख समृद्धि वरदान।
योग-यज्ञ से प्राप्त हो- स्वास्थ्य सिद्धि सम्मान।।

अपने समस्त स्वाध्यायशील एवं हितैषी पाठकों को हार्दिक बधाई है, जिन्होंने अपने उदार सहयोग द्वारा वेद प्रचार एवं राष्ट्रोत्थान में बिना एक भी विज्ञापन के १८ वर्षों से अनवरत संलग्न- 'आर्य लोक वार्ता' को हिन्दी पत्रकारिता के फलक पर गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया है।

आर्य लोक वार्ता को 1200 रु. या इससे अधिक सहयोग प्रदान करने वाले होता (ऋत्विक्) सदस्यों की तालिका- वर्ष 2015

01.01.15 से 31.12.15 तक सहयोग प्राप्ति-तिथि क्रमानुसार

1. अर्जुनदेव चढ़ढा, कोटा, **राजस्थान** (01.01.15)
2. पं.रामलाल आर्य, आर्य समाज, **अमेरिका** (01.01.15)
3. डॉ.रूपचन्द्र दीपक, पतंजलि योगपीठ, **हरिद्वार** (01.01.15)
4. आर्य समाज चन्द्र नगर, **लखनऊ** (15.02.15) (संयोजक- जगदीश खत्री, रण सिंह)
5. आर्य समाज आदर्श नगर, **लखनऊ** (15.02.15) (संयोजक- आत्म प्रकाश बत्रा, सतीश निझावन)
6. अरविन्द कुमार यादव, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ** (28.03.15)
7. आर.के.शर्मा, जानकीपुरम्, **लखनऊ** (11.04.15)
8. डॉ.संजीव कुमार श्रीवास्तव, गोमती नगर, **लखनऊ** (02.05.15)
9. आचार्य ओजोमित्र शास्त्री, आर्य समाज, महावीरगंज, **लखनऊ** (04.05.15)
10. वैदिक सत्संग, अलीगंज, **लखनऊ** (20.05.15) (संयोजक- पाल प्रवीण)
11. जगदीश लाल खत्री, हिन्द नगर, **लखनऊ** (30.06.15)
12. श्रीमती कृष्णा बजाज, आर्य समाज, **बरेली** (01.07.15)
13. श्रीमती रुक्मिणी आर्य, प्रधान, माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, **हरिद्वार** (10.07.15)
14. सुरेन्द्र प्रताप जौहरी, सुजानपुरा, आलमबाग, **लखनऊ** (14.07.15)
15. श्रीमती रेनू भसीन, चन्द्रनगर, आलमबाग, **लखनऊ** (16.07.15)
16. श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई;** (21.07.15)
17. श्रीमती प्रियंका शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ** (11.08.15)
18. दीपक कुमार दर्शन, भूसामंडी, अमीनाबाद, **लखनऊ** (12.08.15)
19. पाल प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, **लखनऊ** (25.08.15)
20. श्रीमती कमलेश पाल, योगाश्रम, अलीगंज, **लखनऊ** (25.08.15)
21. अभिषेक, योगाश्रम, अलीगंज, **लखनऊ** (25.08.15)
22. श्रीमती गीतांजलि, योगाश्रम, अलीगंज, **लखनऊ** (25.08.15)
23. डॉ.सत्य प्रकाश, प्रकाश होम्यो हॉल, सण्डीला, **हरदोई** (25.08.15)
24. श्रीमती मीना दीक्षित, विपुल खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ** (27.08.15)
25. वैदिक स्वाध्याय केन्द्र, नेवाजगंज, चौक, **लखनऊ** (29.08.15) (संयोजक- श्रीमती रमा आर्य 'रमा')
26. आर्य समाज राजाजीपुरम्, **लखनऊ** (06.09.15) (संयोजक- आनन्द मुनि जी)
27. श्रीमती बलवीर कपूर, समर विहार, **लखनऊ** (06.09.15)
28. श्रीमती पी.के.कटियार, अलीगंज, **लखनऊ** (22.09.15)
29. वैदिक स्वाध्याय केन्द्र, **सीतापुर** (28.09.15) (संयोजक- वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी')
30. आर्य समाज इन्दिरा नगर, **लखनऊ** (04.10.15) (संयोजक- डोरीलाल आर्य)
31. डॉ.रजत बत्रा, राणाप्रताप मार्ग, **लखनऊ** (06.10.15)
32. नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ** (25.10.15)
33. डॉ.आनन्द वर्णवाल, राजाजी पुरम, **लखनऊ** (25.10.15)
34. अश्विनी देव कपूर, सरम विहार, **लखनऊ** (11.11.15)
35. जगदीश लाल खत्री, हिन्द नगर, आलमबाग, **लखनऊ** (11.11.15)
36. पं.प्रेमशंकर शुक्ल, गोयल अपार्टमेंट, **लखनऊ** (23.11.15)
30. कौशल किशोर श्रीवास्तव, नया तिलकनगर, **लखनऊ** (10.12.15)
37. श्रीमती रामा आर्य, 'रमा, नेवाजगंज, चौक **लखनऊ** (16.12.15)
38. श्री जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कलखल, **हरिद्वार** (16.12.15)
39. चौधरी रणवीर सिंह, आर्य समाज, **सीतापुर** (31.12.15)

संस्थापक
माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास
ज्वालापुर, हरिद्वार
एवं
'आर्य्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक, लखनऊ

बाल्यकाल मुगलसराय,
आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी सत्याग्रह के नेता
झेला, फिर आर्यभिक्षु
वेद के प्रचार हेतु ग्राम
ओज मधुरस द्वारा जन
आत्मबोध स्वामी
ज्वालापुर आश्रम का

फिर यौवन में,
लखनऊ आ गये।
बने, कारागार-
बनकर छा गये।।
ग्राम धूमे, वाणी-
मन भा गये।
संन्यासी आर्य वानप्रस्थ-
गौरव बढ़ा गये।।

स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी महाराज

आर्य पर्वो की सूची : विक्रमी सम्वत् 2072-73 तद्नुसार सन् 2016

क्रम सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
१		लोहड़ी	पौष शुक्ल, ४, वि.२०७२	१३.०१.२०१६	बुधवार
२		मकर-संक्रान्ति	पौष शुक्ल, ५, वि.२०७२	१५.०१.२०१६	गुरुवार
३		गणतंत्र दिवस	माघ कृष्ण, २, वि.२०७२	२६.०१.२०१६	मंगलवार
४		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, ५, वि.२०७२	१२.०२.२०१६	शुक्रवार
५		सीताष्टमी	फाल्गुन, कृष्ण, ८, वि.२०७२	०२.०३.२०१६	बुधवार
६	ऋषि पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन, कृष्ण, १०, वि.२०७२	०४.०३.२०१६	शुक्रवार
७	ज्योति-पर्व	शिवरात्रि (ऋषि-बोधोत्सव)	फाल्गुन, कृष्ण, १३, वि.२०७२	०७.०३.२०१६	सोमवार
८	वीर-पर्व	पं.लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन, शुक्ल, ३, वि.२०७२	११.०३.२०१६	शुक्रवार
९	मिलन-पर्व	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन, पूर्णिमा, वि.२०७२	२३.०३.२०१६	बुधवार
१०		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा/नवसंवत्सर/ उगाड़ी/गुणी पड़वा/चैती चाँद	चैत्र, शुक्ल, १, वि.२०७३	०८.०४.२०१६	शुक्रवार
११		वैशाखी	चैत्र, शुक्ल, ७, वि.२०७३	१३.०४.२०१६	बुधवार
१२		राम नवमी	चैत्र, शुक्ल, ९, वि.२०७३	१५.०४.२०१६	शुक्रवार
१३		पं.गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख, कृष्ण, ४, वि.२०७३	२६.०४.२०१६	मंगलवार
१४		हरितृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, ३, वि.२०७३	०५.०८.२०१६	शुक्रवार
१५	वेद-प्रचार-समारोह	श्रावणी उपाकर्म-रक्षाबन्धन/ हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	श्रावण, पूर्णिमा, वि.२०७३	१८.०८.२०१६	गुरुवार
१६		श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद, कृष्ण, ८, वि.२०७३	२५.०८.२०१६	गुरुवार
१७		विजयादशमी/दशहरा	आश्विन, शुक्ल, १०, वि.२०७३	११.१०.२०१६	मंगलवार
१८		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्मदिवस	आश्विन, शुक्ल, १२, वि.२०७३	१३.१०.२०१६	गुरुवार
१९	क्षमा-पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक, अमावस्या, वि.२०७३	३०.१०.२०१६	रविवार
२०	बलिदान-पर्व	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष, कृष्ण, १०, वि.२०७३	२३.१२.२०१६	शुक्रवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

सौजन्य : कृष्णा जी, प्रिंटेक, पार्करोड, लखनऊ   परामर्श : रामचन्द्र गुप्त, कुतुबनगर, सीतापुर   आभार : 'आर्य संदेश', नई दिल्ली

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	-	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	-	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	-	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	-	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	-	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	-	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्न बैंकों की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

(1) बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

(2) बैंक-इलाहाबाद बैंक, ए-869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLAO211122
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 5022 3541 717
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
श्री अखिल मित्र शास्त्री, लखनऊ

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३६क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।